अभिनव सिद्धचक्र मंत्रार्चना

रचयिता

आचार्य वसुनंदी मुनि

प्रकाशक

निर्ग्रन्थ ग्रन्थमाला

जिनशासन नायक भगवान् महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाण महोत्सव पर परम पूज्य राष्ट्र हितैषी संत, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा वी. नि. सं. 2550-2551 (सन् नव. 2023-नव. 2024) को **''अहिंसकाहार वर्ष''** के रूप में उद्घोषित किया गया। इसी **''अहिंसकाहार वर्ष''** के उपलक्ष्य में प्रकाशित

कृति : अभिनव सिद्धचक्र मंत्रार्चना

मंगल आशीर्वाद : परम पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती राष्ट्रसंत आचार्य श्री 108 विद्यानन्द जी मुनिराज

कृतिकार : आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज

सम्पादन : मुनि प्रज्ञानंद

संस्करण : प्रथम (सन् 2024)

प्रतियाँ : 1000

ISBN : **978-93-94199-48-4**

मूल्य : 35/- (Not for Sale)

प्रकाशक : निर्ग्रन्थ ग्रंथमाला समिति (रजि.)

प्राप्ति स्थल : C/117, बेसमेंट, सेक्टर 51, नोएडा-201301
मो. 9971548889, 8800091252

मुद्रक : मित्तल इंडस्ट्रीज़, नई दिल्ली
मो. 9312401976

Visit us @ www.acharyavasunandi.com
www.shreevasuvidya.com

संपादकीय

येनात्माऽबुध्यतात्मैव परत्वेनैव चापरम्।
अक्षयानन्तबोधाय तस्मै सिद्धात्मने नमः॥1॥ समाधितंत्र

जिसके द्वारा आत्मा आत्मरूप से ही जाना गया है और अन्य को–कर्म जनित मनुष्यादि पर्यायरूप पुद्‌गल को पर रूप से ही जाना गया है उस अविनाशी अनन्तज्ञानस्वरूप सिद्धात्मा को नमस्कार हो।

सम्यक् श्रद्धा के क्षीरसागरीय, मधुरिम, शीतल, निर्वद्य, धवल जल से ही चेतना को अभिषिक्त किया जा सकता है। चित्त में प्रकट हुई भक्ति के परिणामों से शांतिधारा कर उसे स्फटिक के समान अत्यंत निर्मलता प्रदान की जा सकती है। अभिनव सिद्धचक्र महार्चना चैतन्य विकारों को परिमार्जन करने, अनादिकालीन अभिनय को मिटाने एवं अभिरुचिपूर्वक स्वात्मोपलब्धि हेतु अविरामी पुण्य की प्रक्रिया को प्रकट करने का उत्तम अभियान है।

भक्ति से अभिषिक्त आत्मा अभिवंदनीय तो होती ही है साथ ही परम अभ्युदय को प्राप्त करने में भी नियम से समर्थ होती है। सिद्धार्चना करने का भाव उसी भव्यात्मा में प्रकट होना शक्य है जिसे निकट भविष्य में सिद्धत्व पर्याय को उपलब्ध होना है। शक्तिरूपेण सिद्धस्वरूपी आत्मा बिना निमित्तों के अपनी शुद्ध पर्याय को प्रकट करने में उसी प्रकार असमर्थ होती है जिस प्रकार सधवा स्त्री पति के बिना वंशवृद्धि में असमर्थ होती है।

''अभिनव सिद्धचक्र महार्चना'' पुरातन संस्कारों का विनाश एवं मोक्षमार्ग के नूतन संस्कारों को विकसित करने की प्रधान साधिका है। 'अभिनव' शब्द जीवन में नवऊर्जा, उत्साह, उल्लास, उमंग और आनंद का प्रेरक भी है। सिद्धसमूह की अर्चना चेतना के अनंत, अखंड चिन्मय पिंड की जन्मदात्री है। 'महार्चन' महाव्रत एवं आत्मा की सर्वोत्कृष्ट अवस्था को प्रकट करने वाला जनक है।

सिद्धचक्र अर्चना के अतिरिक्त अन्य किसी भी देवता की अर्चना असिद्ध अर्चना होती है। असिद्ध देवताओं की अर्चना मोक्षमार्गी तो बनाती है किंतु मोक्ष की प्रत्यक्ष कारिका सिद्धोपासना ही है। सिद्धों की अर्चना का तात्कालिक अनुभव निःसीम, शब्दातीत, विषयातीत, कषायातीत, निरवद्य, अखंड व परम मंगल प्राप्त करने में है।

नई खूबी नई रंगत नए अरमान पैदा कर।
बनना चाहे सिद्ध तो अभिनव सिद्ध महा अर्चना कर॥

सिद्धों का चर्चन, सिद्धों की चर्चा, सिद्ध गुणों का चिंतन एवं सिद्धों की अत्यंत निकटवर्ती भूतपर्याय की चर्या करने में वही समर्थ होते हैं जो कारण समयसार एवं कार्य समयसार के अनुभवी ज्ञाता होते हैं। अर्चना शब्द का अर्थ अपने इष्ट आराध्य के प्रति एकमेक होना है। यह अनुभूति में उस पर्याय के प्रति अभिरुचि, संस्पर्श एवं शुद्धात्मानुभूति की विशिष्ट प्रक्रिया है। व्यवहार में उपास्य, उपासक, उपासना व उपासना फा फल पृथक्-पृथक् ज्ञान में आते हैं किन्तु शुद्ध निश्चयनयावलंबी योगी अभेद रूप में ही चारों का अनुभव करता है। उस दशा में ध्यान, ध्याता, ध्येय व ध्यान के फल की व्याख्या पृथक्-पृथक् संभव नहीं।

छोटा बालक मिठाई का नाम सुनकर वा मनोवांछित वस्तु प्राप्त कर वा अपनी जननी की गोदी प्राप्तकर जिस प्रकार आनंदित होता है उस प्रकार आसन्न भव्यजीव सिद्धों का नामोच्चारण, गुणानुराग, स्वभावचिंतन, सिद्धत्व की प्रक्रिया एवं पूजा, भक्ति, वंदना, स्तुति, उपासना में गूंगे के गुड़ के स्वाद की तरह उत्कृष्ट आनंद युत परम दशा को प्राप्त हो जाता है।

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य भगवन् गुरुवर श्री वसुनंदी जी मुनिराज की लेखनी से प्रसूत प्रस्तुत ''अभिनव सिद्धचक्र

महार्चना" उनकी सिद्धों के प्रति गहन श्रद्धा का प्रतीक है। जिनशासन व जैन–संस्कृति के संवर्द्धन व संरक्षण हेतु पूज्य गुरुदेव ने अनेक आगम ग्रन्थों का लेखन अनुवाद व संपादन कर मात्र जैन साहित्य जगत् पर नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व पर महान् उपकार किया है। इस विधान में कुल नवपूजन व आठ कोष्ठ हैं। इसमें प्रथम कोष्ठ में क्षायिकलब्धि व वस्तुत्वादि गुणों से युक्त सिद्धपरमेष्ठि के 24 अर्घ्य हैं, द्वितीय कोष्ठ में अरिहंतों के 46 मूलगुणों के भोक्ता सिद्धों के 48 अर्घ्य हैं। तृतीय कोष्ठ में आत्मशक्ति से संयुक्त सिद्धों के 61 अर्घ्य हैं। चतुर्थ कोष्ठ में ऋद्धियों के परमफल को प्राप्त सिद्धों के 92 अर्घ्य हैं। पंचम कोष्ठ में जीवा–जीवाधिकरण से मुक्त सिद्धों के 123 अर्घ्य हैं। षष्ठ कोष्ठ में सर्वकर्म प्रकृतियों से रहित सिद्धों के 148 अर्घ्य हैं। सातवें कोष्ठ में विशिष्ट वा परम गुणों से युक्त सिद्धों के 260 अर्घ्य हैं एवं आठवें कोष्ठ में सिद्धों के नाम व अन्य गुणों से युक्त सिद्धों के 576 अर्घ्य हैं। इस प्रकार इस विधान में कुल 24 + 48 + 61 + 92 + 123 + 148 + 260 + 576 = 1, 332 अर्घ्य हैं। जिनका कुल जोड़ (1 + 3 + 3 + 2) 9 है। पूज्य गुरुदेव के ग्रन्थों में यह विशेषता मिलती है कि उनके काव्यों का जोड़ मुख्यता से 3 अथवा 6 वा 9 दृष्टिगोचर होता है। वही समानता इस विधान में भी देखने को मिलती है।

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज ने सिद्धों के प्रति भक्ति से ओतप्रोत होकर श्री सिद्धचक्र विधान की अर्चना की। पूज्य गुरुदेव से कई व्रतियों और श्रावकों ने 24, 51, 108 सिद्धचक्र विधान के नियम लिए एवं कुछ भक्तों ने 1008 विधान करने की भावना भायी। किन्तु समय की अल्पता के कारण इस महाविधान को करना यूँ संभव नहीं है। अतः यहाँ प्रस्तुत कृति 'अभिनव सिद्धचक्र मंत्रार्चना' में उस महाविधान में से

मात्र अर्घावली प्रस्तुत की गई है जिससे लघु रूप में भी अर्चना करने के इच्छुक महानुभाव परिणामों की विशुद्धि के साथ विधान संपन्न कर सकें। हमें आशा ही नहीं विश्वास भी है कि विधान में उल्लिखित मंत्र आपकी आत्मविशुद्धि में कारण बनेंगे। मंत्रों के साथ सिद्धों की यह आराधना सर्व कार्यों की सिद्धि करने एवं आत्मा को भी सिद्ध करने में समर्थ होगी।

प्रस्तुत **''अभिनव सिद्धचक्र मंत्रार्चना''** के सम्पादन में मुझ अल्पज्ञ के द्वारा जो त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन उसे संशोधित करके पढ़ें और हंसवत् गुणग्राही दृष्टि से अच्छाइयों को परम पूज्य गुरुवर श्री का आशीर्वाद समझकर ग्रहण करें। जैन वाङ्मयरूपी महोदधि के संवर्धक पूर्णेन्दु सदृश परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज का पावन मंगलमय आशीर्वाद समस्त मानवजाति को युग-युगान्तर तक प्राप्त होता रहे और उनके आशीष की छत्रछाया में भव्यजीव संयम से पुष्पित, पल्लवित एवं फलित होते रहें। इसी पुण्य भावना के साथ परम पूज्य गुरुवर के श्री चरणों में अनन्तशः नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!

इति शुभम् भूयात्

जैनम् जयतु शासनम् **विश्वकल्याण कारकम्**

शुभमिति कार्तिक कृष्ण अमावस्या ॐ ह्रीं नमः

वीर निर्वाण संवत् 2550 गुरु चरणाम्बुज चंचरीक

शुक्रवार 1 नवम्बर 2024 मुनि प्रज्ञानंद

छदामी लाल जैन मंदिर, फिरोजाबाद

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥२॥

तिहुँ जग की पीड़ाहरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥३॥

हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥४॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥५॥

मैं वन्दों जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥६॥

भविजन को भवकूपतैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण-भण्डार॥७॥

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥८॥

तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥९॥

चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलें आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१२॥

थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग-कुटेव॥१४॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥

तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥१७॥

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप समान॥१८॥

तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूबो जात हौं, नेक निहार निकार॥१९॥

जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसौं बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥

वन्दों पाँचों परमगुरु, सुर गुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥

चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥१॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वंदूँ स्वयमेव॥२॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वंदूँ मन वच काय॥३॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥४॥
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत॥५॥

॥ इति मंगल पाठ ॥

णियड भव्वो हि सक्को, कुणिदं सस्सद-सिद्ध-खेत्त-जत्तं।
झायिदुं समवसरणं, मुणीणं च देदुमाहार॥758॥
-(समवसरण सोहा, आ. वसुनंदी मुनि)

शाश्वत सिद्ध क्षेत्र की यात्रा, समवशरण का ध्यान और मुनियों को आहार दान देने में निकट भव्य ही समर्थ होते हैं।

सण्णाणं हरदि दुहं, विणस्सदि णियमेण रायद्दोसं।
संवेअ-वेरग्गाण, जिणभत्ति कारणं पमुक्खं॥213॥
-(आत्म वैभव-आ. वसुनंदी मुनि)

सम्यग्ज्ञान दुःख नष्ट करता है, नियम से राग-द्वेष विनष्ट करता है और यह सम्यग्ज्ञान संवेग, वैराग्य व जिनभक्ति का प्रमुख कारण है।

पूजन-पीठिका

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥१॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलि क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवललिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि।
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच - नमस्कारं, सर्व पापैः प्रमुच्यते॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स, बाह्याभ्यंतरे शुचिः॥२॥
अपराजित - मंत्रोऽयं, सर्व - विघ्न - विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥३॥
एसो पंच-णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं॥४॥

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म - वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्‌बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्॥५॥
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्॥६॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥७॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक - चंदन - तंदुल - पुष्पकैश्चरु - सुदीप - सुधूप - फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक - चंदन - तंदुल - पुष्पकैश्चरु - सुदीप - सुधूप - फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥२॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत-सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्त्रनाम का अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे॥३॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनअष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनवांङ्महं यजे॥४॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेंद्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशम्,
स्याद्वाद - नायक - मनंत - चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ - सुदृशां सुकृतैकहेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥१॥
स्वस्ति त्रिलोक - गुरवे जिन - पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश - सहजोर्ज्जित - दृङ् मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥
स्वस्त्युच्छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव - परभाव - विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक - विततैक - चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥३॥
द्रव्यस्य शुद्धि - मधिगम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि मधिकामधिगंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ - यज्ञ - पुरुषस्य करोमि यज्ञं॥४॥

अर्हन् पुराण पुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन्ज्वल – द्विमल – केवल – बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥५॥

ॐ विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

स्वस्ति-मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनंदनः॥
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः॥
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः॥
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनंतः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः॥
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः॥
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः॥

(इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधानं
पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

(प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये)

नित्याप्रकम्पाद्भुत - केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय - शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान - बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१॥

कोष्ठस्थ - धान्योपममेकबीजं, संभिन्न - संश्रोतृ - पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन - घ्राण - विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान - बलाद्वहंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥३॥

प्रज्ञा - प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धा दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः,स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥४॥

जंङ्घावलि-श्रेणि-फलांबु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गगण-स्वैर-विहारिणश्च,स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥६॥

सकामरूपित्व - वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर-गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥८॥

आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी - र्विषाविषा दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥१०॥

॥ इति परमर्षिस्वस्तिमंगल-विधानं पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

नवदेवता पूजन

स्थापना

(छंद–हरिगीतिका) (तर्ज–मैं देव श्री अरिहंत...)

त्रैलोक्य में तिहुँ काल में नवदेवता जग वंदिता।
अरिहंत सिद्धा सूरि पाठक, साधु मुनिवर नंदिता।।
जिन चैत्य अरु जिन सदन श्रुत जिन धर्म कल्याणक महा।
आश्रित रहे जो भव्य इनके, मोक्ष उनने ही लहा।।

दोहा

नवदेवों को भक्ति वश, आह्वानन कर आज।
योगत्रय से पूजकर, लहूँ उभय साम्राज।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु–जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–चैत्यालय समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु–जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–जिनचैत्यालय समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु–जिनधर्म–जिनागम–जिनचैत्य–जिनचैत्यालय समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अष्टक

(छंद–हरिगीतिका)

पूर्णेन्दु निर्मल ज्योत्सना सम, धवल शीतल नीर ले,
जन्मादि रोगत्रय विनाशूँ, देव पद त्रयधार दे।

संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य - जिनचैत्यालयेभ्यो जन्म - जरा - मृत्यु - विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुगंधित मलयगिरि तन-ताप हारक चंदनं,
नव देवता के चरण आगे, भक्ति पूजा वंदनं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तासमा अति धवल द्युतिमय, चारु तंदुल लाय के,
शाश्वत विमल शिवसौख्य पाने, देव चरण चढ़ाय के।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्योऽक्षयपद-प्राप्तयेऽक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वातावरण कर दे सुगंधित, पुष्प मनहर लाए हैं,
निष्काम जिन को कर समर्पित, काम नशने आये हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्यः कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन अनूपम सरस रुचिकर, देह की क्षुध नाशती,
आराध्य की पूजा करें तो, चेतना निधि भासती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्यः क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गगन आँगन में चमकते, ज्योति ग्रह सम दीप हैं,
विधि मोहनी के नाश हेतू, आये आप समीप हैं।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध युत ये धूप मनहर, वर्गणा दुख नाशती,
जिन चरण आगे धूप खेऊँ, आत्मनिधि परकाशती।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्योऽष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्ष फल को प्राप्त करने, भक्तिवश अर्पण किये,
मम अक्ष रुचिकर सरस मनहर, फल सभी ऋतु के लिये।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार की बहुमूल्य मंगल, अर्घ द्रव्यों का बना,
बहुमूल्य शिवपद पाने हेतु, भक्तिरस में मैं सना।
संसार नव विधि नाश करने, कोटि नव से मैं जजूँ,
पाने विभव निज चेतना का, देवता नव नित भजूँ।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्योऽनर्घपद-प्राप्तयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य-ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु- जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्यो नमः।

(नौ बार उक्त मंत्र पढ़कर पुष्प क्षेपण करें)

जयमाला

(छंद-लक्ष्मीधरा)

(तर्ज-भौन बावन्न प्रतिमा.../कौन कहता है भगवान् आते नहीं...)

देव सर्वज्ञ प्राणी सदा मंगलं, नंत ज्ञानं सुखं दर्श नंतं बलं।
प्रातिहार्यं युतं वीतरागं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।१।।
सिद्ध शुद्धं शिवं निर्विकारं तथा, अव्ययं अक्षयं आत्मलीनं सदा।
विश्वनाथं प्रभो मुक्तिवामा वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।२।।

दर्श औ ज्ञान चारित्र संपोषकं, संघ संचालकं सूरि आराधकं।
पंच आचार पाले जिनं नंदनं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।३।।

हे उपाध्याय सुज्ञान दातार हो, भव्य के वासते सम्यकाधार हो।
साधकं द्वादशांगं सुपाठी वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।४।।

राग द्वेषादि को साधु संहारते, देव निर्ग्रंथ जो आत्म सम्हारते।
पालते हैं गुणं साधु मूलोत्तरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।५।।

भेद दो श्रावका और साधू कहा, तारता धर्म संसार से है अहा।
चिह्न स्याद्वाद से युक्त धर्मं वरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।६।।

देव सर्वज्ञ द्वारा गयी है कही, गूंथते हैं गणेशा मुनी ने गही।
शारदा माँ सदा चित्त में ही धरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।७।।

सौख्य है निर्विकारी तथा शांत है, भक्ति से होय वे मुक्ति के कांत हैं।
कृत्रिमाकृत्रिमं चैत्य सिद्धीवरं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।८।।

तोरणा-द्वार घंटा ध्वजा सज्जिता, देव प्रक्षाल पूजा सदा अर्चिता।
शुभ्र चैत्यालयं पाप संहारकं, पूजता भक्ति से देव सौख्यं करं।।९।।

छंद-त्रिभंगी

अरिहंत जिनेशा, सिद्ध महेशा, सूरी पाठक दिग्वासी।
श्रीचैत्य जिनालय, श्रुत ज्ञानालय, धर्म पूजता अविनाशी।।
वसु कर्म नशाए, वसुगुण पाए, वसु वसुधा को नित्य लहे।
वसुभूमि सभा की, सिद्ध रमा की, वसुनन्दी भी शीघ्र गहे।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-जिनचैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

अर्हतादि नवदेवता, सदा करें उर वास।
पुष्पाञ्जली चढ़ाय के, पाऊँ मोक्ष निवास।।

(शान्तये शांतिधारा पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

श्री अभिनव सिद्धचक्र मंत्रार्चना

मंगलाचरण

(छंद–शंभु) (तर्ज–हे गुरुवर शाश्वत.../हे वीर तुम्हारे द्वारे....)

केवल सुबोधि अवबोधक है, वर्णिक 'अकार' बीजाक्षर में।
पुनि रेफ दिखाती नंत दर्श, अरू वीर्यनंत 'ह' अक्षर में॥
शुभ अनुस्वार जो जुड़ा हुआ, है नंत सौख्य वह दर्शाता।
श्रीसिद्धचक्र शुभ यंत्र सु थित, ''अर्हं'' भव्यों के मन भाता॥

(दोहा)

सिद्ध चक्र जिन यंत्र को, थापूँ धर शुभ भाव।
सिद्ध चक्र अर्चन करूँ, पाने शुद्ध स्वभाव॥

(छंद–लक्ष्मीधरा) (तर्ज–भौन बावन्न.../कौन कहता है...)

ह्रँ सु प्राची दिशा सुस्वरा राजते,
दिव्यशक्ती युता सर्वदा साजते।
द्रव्य अष्टांग ले पूजता हूँ सदा,
भक्ति श्रद्धान से नाथ होके मुदा॥

ॐ ह्रीं अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः अनाहत–पराक्रमाय–सिद्धाधिपतये नमः पूर्वदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि कोणे ''कवर्गा'' महा शोभता,
भव्य के चित्त को नित्य ही मोहता।
द्रव्य अष्टांग ले पूजता हूँ सदा,
भक्ति श्रद्धान से नाथ होके मुदा॥

ॐ ह्रीं अर्हं क ख ग घ ङ अनाहत-पराक्रमाय-सिद्धाधिपतये आग्नेयदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुप्रसिद्धा अवाची ''चवर्गा'' कहे,
पूजके सिद्ध को सर्व कर्मा दहे।
द्रव्य अष्टांग ले पूजता हूँ सदा,
भक्ति श्रद्धान से नाथ होके मुदा।।

ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ ञ अनाहत-पराक्रमाय-सिद्धाधिपतये दक्षिणदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नैऋते कोण में हो ''टवर्गा'' महा,
पूज्यता प्राप्त हो पूजते ही अहा।
द्रव्य अष्टांग ले पूजता हूँ सदा,
भक्ति श्रद्धान से नाथ होके मुदा।।

ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ ण अनाहत-पराक्रमाय-सिद्धाधिपतये नैऋत्य दिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग् प्रतीची ''तवर्गा'' प्रशस्तास्थिता,
सिद्ध पूजें भवी होय विश्वाजिता।
द्रव्य अष्टांग ले पूजता हूँ सदा,
भक्ति श्रद्धान से नाथ होके मुदा।।

ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध न अनाहत-पराक्रमाय-सिद्धाधिपतये पश्चिम दिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायु कोणे ''पवर्गा'' प्रभावी महा,
भक्ति से पूजता स्वात्मवासी अहा।
द्रव्य अष्टांग ले पूजता हूँ सदा,
भक्ति श्रद्धान से नाथ होके मुदा।।

ॐ ह्रीं अर्हं प फ ब भ म अनाहत-पराक्रमाय-सिद्धाधिपतये वायव्यदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग् उदीची ''यवर्गा'' गुणावर्द्धका,
भव्य ही पूजते धर्म संवर्द्धका।
द्रव्य अष्टांग ले पूजता हूँ सदा,
भक्ति श्रद्धान से नाथ होके मुदा।।

ॐ ह्रीं अर्हं य र ल व अनाहत-पराक्रमाय-सिद्धाधिपतये उत्तरदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोण ईशान में है ''शवर्गा'' कहा,
सिद्ध अर्चा सदा पुण्य देती महा।
द्रव्य अष्टांग ले पूजता हूँ सदा,
भक्ति श्रद्धान से नाथ होके मुदा।।

ॐ ह्रीं अर्हं श ष स ह अनाहत-पराक्रमाय-सिद्धाधिपतये ईशानदिशि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

''पठेदष्टोत्तरं नाम्नां सहस्रं पाप शान्तये।''

(श्री जिनसहस्रनाम स्तोत्र)

श्री जिनेन्द्र भगवान के 1008 नामों को पढ़ने से अनंतों पाप शान्त होते हैं।

अथ प्रथमकोष्ठोपरि दिव्य-मंगल-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

प्रथम पूजन

स्थापना

(छंद-हरिगीतिका) (तर्ज-मैं देव श्री अरिहंत....)

सम्यक्त्व आदिक गुण अनंता, सिद्ध चेतन राजते,
शाश्वत गुणों से खचित चिन्मय, लोक शिखर विराजते।
श्रीसिद्धपद के अग्रगामी, सिद्ध पद वंदन करें,
जिन वंदना के छल हि मानो, स्वात्म अभिनंदन करें॥1॥

माधुर्य ज्यों सुस्वभाव से ही, इक्षु दंडों में रहे,
सम्यक्त्व युत शुभ भक्ति की रसधार मम चित में बहे।
दिनकर समा शिव नित प्रकाशी, कर्म मल से हीन हो,
शुभ ज्योत्सना शशि सम सदा मम, चित्त तव गुण लीन हो॥2॥

जैसे सुमन में सुखद सौरभ, नंद संवर्द्धित करे,
त्यों सु-मन युत भवि मनुज को तव, नाम शुभ गुण से भरे।
बहु विघ्ननाशक कार्यसाधक, नाम तव विख्यात है,
जो भव्य चित में धारता होता निरोगी गात[1] है॥3॥

श्री नित्य निकल निरुज निरूपम, निर्विकारी शिव बने,
शाश्वत सकल गुण धाम चिन्मय, नंतगुणमय तुम सने।
निर्मोह निर्मल भक्ति युत शुभ, भव्य जो तव गुण गिने,
भवि स्तोक[2] भव पाकर वही फिर, शिव बने विधि को हने॥4॥

सब पापनाशक पुण्यदायक, मुक्तिकारक अर्चना,
त्रैयोग निर्मल नित्य करके, कर रहे शुभ वंदना।

1. शरीर, 2. अल्प

हे नाथ आत्मप्रदेश रूपी, काष्ठ संस्पर्शन करो,
पावक समा तव अर्चना शिवरूप पावन मम करो॥5॥

ज्यों पल रहे उन स्यार संगनि, सिंह शावक[1] देखकर,
मृगराज तब उसको बुलाता, प्रीतिवश संबोधकर।
ऐसे हितंकर सिद्ध जिन हम पर कृपा करते अती,
शुभ स्वत्व शक्ती बोध देकर, की हमारी शुभ मती॥6॥

श्रीसिद्ध अर्चन के लिए शुभ, भाव मेरे यूँ हुए,
प्रभु सिद्ध जिन प्रेषित मनो संदेश मम चित को छुए।
वंशज हमारे और अंशज, भव विपिन में क्यों पड़े,
आओ हमारे साथ बैठो, सिद्ध वासी हो बड़े॥8॥

श्रीसिद्धचक्र विधान रचकर, मैं हि उत्तर दे रहा,
प्रभु आप सा ही सुपद पाने, आप सम्मुख बढ़ रहा।
मैं आ रहा हूँ आपके अति, निकट जल्दी हे प्रभो,
सिद्धार्चना का पथ बना अब, चल दिया हूँ मैं विभो॥7॥

दोहा

भक्ति भाववश भक्त नित, टेरे हो बेचैन।
तव भक्ती का हूँ तृषक, चातकवत् दिन रैन॥
आह्वानन मैं नित करूँ, उर अंबुज विकसाय।
उर आसन पर तिष्ठिये, आँसू रहे बुलाय॥
मैं अबोध नादान हूँ, ना जानूँ कुछ रीत।
हृदय देखकर आइये, मेरी सच्ची प्रीत॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

1. संतान/बच्चा

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं श्रीसिद्धपरमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम्।

क्षायिकलब्धि व वस्तुत्वादि 24 गुण मंत्रावली

ॐ ह्रीं परमसम्यक्त्व-गुणसहिताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः।।1।।

ॐ ह्रीं परमचारित्रगुण-सहिताय श्रीसिद्ध.।।2।।

ॐ ह्रीं क्षायिकज्ञान-सहिताय श्रीसिद्ध.।।3।।

ॐ ह्रीं क्षायिकदर्शन-सहिताय श्रीसिद्ध.।।4।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-दानसहिताय श्रीसिद्ध.।।5।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-लाभसहिताय श्रीसिद्ध.।।6।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-भोग-सहिताय श्रीसिद्ध.।।7।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-उपभोग-सहिताय श्रीसिद्ध.।।8।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-वीर्य-सहिताय श्रीसिद्ध.।।9।।

ॐ ह्रीं अस्तित्वगुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।10।।

ॐ ह्रीं वस्तुत्वगुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।11।।

ॐ ह्रीं द्रव्यत्वगुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।12।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वगुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।13।।

ॐ ह्रीं प्रमेयत्वगुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।14।।

ॐ ह्रीं प्रदेशत्वगुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।15।।

ॐ ह्रीं चेतनत्वगुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।16।।

ॐ ह्रीं ज्ञानचेतना-सहिताय श्रीसिद्ध.।।17।।

ॐ ह्रीं दर्शनचेतना-सहिताय श्रीसिद्ध.।।18।।

ॐ ह्रीं अमूर्तत्व-गुणयुक्ताय सहिताय श्रीसिद्ध.।।19।।

ॐ ह्रीं जीवत्वगुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।20।।

ॐ ह्रीं भेदाभेद–गुणयुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः।।21।।

ॐ ह्रीं एकानेक–गुणयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।22।।

ॐ ह्रीं परमस्वभाव–गुणयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।23।।

ॐ ह्रीं नित्यानित्य–गुणयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।24।।

महार्घ्य

(मनहरण छंद) (तर्ज–मिथ्यातम नाशवे....)

वसुकर्मों को नश, आतमगुणों को वश।
कर शिव आलय में, जाकर विराजे हैं।।
ज्ञानादि अनंतगुण, संग शुद्ध परजाय।
निश्चय से स्वामी नित, स्वातम में साजे हैं।।
ध्यान ध्येय ध्याता का, विकल्प सब नष्ट कर।
चेतना की शुद्ध परिणति में सु राजे हैं।।
सिद्ध चक्र अर्चना रचाएं जो खुले हैं उसे।
मोक्ष सुमहल के शुभ दरवाजे हैं।।

ॐ ह्रीं क्षायिकलब्धि–वस्तुत्वादिगुण–सहिताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा।। दिव्य–पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

अथ द्वितीयकोष्ठोपरि दिव्य-मंगल-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

द्वितीय पूजन

(स्थापना)

(शार्दूल विक्रीडित छंद) (तर्ज-अर्हंतो भगवंत इन्द्र....)

घाती सर्व अघाति कर्म रहिता, सद्ज्ञान देही विभो!,
शुद्धात्मानुभवी निजात्म रसिका, लोकाग्रवासी प्रभो।
सिद्धार्चा करने सुभाव विमला, लेके सदा वंदिता,
मेरे आत्मप्रदेश वास करना, देवेश आनंदिता।।

(दोहा)

अविकारी गुणखान जिन, परम ब्रह्म रस लीन।
शुद्धातम मैं बन सकूँ, आह्वानन स्वाधीन।।

ॐ ह्रीं अतिशयादिगुण-भुक्ताभुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं अतिशयादिगुणभुक्ताभुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अतिशयादिगुणभुक्ताभुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अतिशयादि 48 अर्घ्य मंत्रावली

ॐ ह्रीं सुंदररूपातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः।।1।।

ॐ ह्रीं तनरूपातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।2।।

ॐ ह्रीं स्वेदाभावरूपातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध. ।।3।।

ॐ ह्रीं निहाराभावातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।4।।

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन-रूपातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।5।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबल-रूपातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।6।।

ॐ ह्रीं श्वेतरुधिरातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।7।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्टोत्तर-शुभलक्षणयुक्त-रूपातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।8।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्रसंस्थान-रूपाकृतिभुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।9।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहनन-रूपातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।10।।

दस केवलज्ञानातिशय मंत्र

ॐ ह्रीं शतयोजनसुभिक्षतारूप-कैवल्यातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।11।।

ॐ ह्रीं गगनगमनरूप-कैवल्यातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।12।।

ॐ ह्रीं चतुर्दिशमुखमण्डल-कैवल्यातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।13।।

ॐ ह्रीं अदया-अभावरूप-कैवल्यातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।14।।

ॐ ह्रीं निरुपसर्गतारूप-कैवल्यातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।15।।

ॐ ह्रीं कवलाहाराभावरूप-कैवल्यातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वविद्येश्वरत्वरूप-कैवल्यातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।17।।

ॐ ह्रीं नखकेशवृद्धिविहीनतारूप-कैवल्यातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।18।।

ॐ ह्रीं अनिमिषदृष्टिरूप-कैवल्यातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।19।।

ॐ ह्रीं छायारहितरूप-कैवल्यातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।20।।

14 देवकृतातिशय मंत्र

ॐ ह्रीं अर्धमागधीभाषा-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।21।।

ॐ ह्रीं सर्वजन-मैत्रीभाव-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।22।।

ॐ ह्रीं निर्मलदिग्दिशत्व-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।23।।

ॐ ह्रीं निर्मलाकाश-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।24।।

ॐ ह्रीं षड्ऋतुफलित-पुष्पफल-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।25।।

ॐ ह्रीं दर्पणवत्-पृथ्वीतल-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।26।।

ॐ ह्रीं पादन्यास-कमलरचना-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।27।।

ॐ ह्रीं नभसि-जयघोष-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।28।।

ॐ ह्रीं सुगंधितपवन-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।29।।

ॐ ह्रीं गंधोदकवृष्टि-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।30।।

ॐ ह्रीं निष्कंटकभूमि-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।31।।

ॐ ह्रीं हर्षितसृष्टि-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।32।।

ॐ ह्रीं अग्रगामिधर्मचक्र-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।33।।

ॐ ह्रीं अष्टमंगलद्रव्य-सुरकृतातिशय-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।34।।

अष्टप्रातिहार्य मंत्र

ॐ ह्रीं अशोकतरु-सत्प्रातिहार्य-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।35।।

ॐ ह्रीं सिंहासन-सत्प्रातिहार्य-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।36।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय-सत्प्रातिहार्य-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।37।।

ॐ ह्रीं भामण्डल-सत्प्रातिहार्य-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।38।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि-सत्प्रातिहार्य-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।39।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टि-सत्प्रातिहार्य-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।40।।

ॐ ह्रीं चामर-सत्प्रातिहार्य-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।41।।

ॐ ह्रीं दुंदुभि-सत्प्रातिहार्य-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।42।।

अनंत चतुष्टय मंत्र

ॐ ह्रीं अनंतज्ञान-गुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।43।।

ॐ ह्रीं अनंत-दर्शन-गुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।44।।

ॐ ह्रीं अनंत-सुख-गुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।45।।

ॐ ह्रीं अनंत-वीर्य-गुण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।46।।

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक-विभूति-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्ध.।।47।।

ॐ ह्रीं षोडशकारणभावनाया: परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।48।।

महार्घ्य

(हुल्लास छंद) (चौपाई + त्रिभंगी)

सिद्ध जन्म केवल अतिशायी, सुरकृत भी पाए सुखदायी।
प्रातिहार्य युत नंत चतुष्टा, पूज हुए भविगण संतुष्टा।।
अर्हत् निज वैभव, भोग बने तब, शिववर निज गुण अधिनायक।
तुम पूर्ण अकामी, त्रिभुवन नामी, प्रभु निष्कामी जिनशासक।।
सिद्धों का वंदन, नाशे क्रंदन, हरता बंधन कर्मों का।
पूर्णार्घ्य चढ़ाऊँ, तव गुण गाऊँ, ताज गहूँ शिव शर्मों[1] का।।

ॐ ह्रीं अतिशयादिगुण-भुक्ताभुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शान्तये शान्तिधारा.... दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।।

---

1. सुखों

(अथ तृतीयकोष्ठोपरि दिव्य-मंगल-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

तृतीय पूजन

स्थापना

(छंद-रूपक सवैया) (तर्ज भला किसी का....)

आत्मशक्ति प्रगटायक जिनवर, स्वपर हितैषी नित अविकार।
त्रिविध कर्म के नाशक जिनवर, स्व पर हितंकर शिव गुणधार॥
दोष विनाशक सुगुण प्रकाशक, रवि सम जग में भव्याधार।
आह्वानन कर नित्य पूजता, भव सागर से कर दो पार॥

ॐ ह्रीं आत्मशक्ति-संयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं आत्मशक्ति-संयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं आत्मशक्ति-संयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

आत्मशक्ति युक्त 61 अर्घ्य मंत्रावली

ॐ ह्रीं जीवत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः॥1॥

ॐ ह्रीं चितिशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.॥2॥

ॐ ह्रीं दृशिशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.॥3॥

ॐ ह्रीं ज्ञानशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.॥4॥

ॐ ह्रीं सुखशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.॥5॥

ॐ ह्रीं वीर्यशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.॥6॥

ॐ ह्रीं प्रभुत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.॥7॥

ॐ ह्रीं विभुत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वदर्शित्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।10।।

ॐ ह्रीं स्वच्छत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।11।।

ॐ ह्रीं प्रकाशत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।12।।

ॐ ह्रीं असंकुचित-विकासत्वशक्ति-युक्त-श्रीसिद्ध.।।13।।

ॐ ह्रीं अकार्यकारणत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।14।।

ॐ ह्रीं अकारणत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।15।।

ॐ ह्रीं परिणम्य-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।16।।

ॐ ह्रीं परिणामकत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।17।।

ॐ ह्रीं त्यागादानशून्यत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।18।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।19।।

ॐ ह्रीं उत्पादव्ययध्रुवत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।20।।

ॐ ह्रीं परिणामशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।21।।

ॐ ह्रीं अमूर्तत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।22।।

ॐ ह्रीं अकर्तृत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।23।।

ॐ ह्रीं अभोक्तृत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।24।।

ॐ ह्रीं निष्क्रियत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।25।।

ॐ ह्रीं नियतप्रदेशत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।26।।

ॐ ह्रीं स्वधर्मव्यापकत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।27।।

ॐ ह्रीं साधारणासाधारण-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।28।।

ॐ ह्रीं अनंतधर्मत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।29।।

ॐ ह्रीं विरुद्धधर्मत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।30।।

ॐ ह्रीं तत्त्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।31।।

ॐ ह्रीं अतत्त्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।32।।

ॐ ह्रीं एकत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।33।।

ॐ ह्रीं अनेकत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।34।।

ॐ ह्रीं भावशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।35।।

ॐ ह्रीं अभावशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।36।।

ॐ ह्रीं भावाभाव-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।37।।

ॐ ह्रीं अभावभावशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।38।।

ॐ ह्रीं भाव-भावशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।39।।

ॐ ह्रीं अभाव-अभाव-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।40।।

ॐ ह्रीं भावशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।41।।

ॐ ह्रीं क्रियाशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।42।।

ॐ ह्रीं कर्मशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।43।।

ॐ ह्रीं कर्तृशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।44।।

ॐ ह्रीं करणशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।45।।

ॐ ह्रीं संप्रदानशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।46।।

ॐ ह्रीं अपादानशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।47।।

ॐ ह्रीं सम्बन्ध-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।48।।

ॐ ह्रीं अधिकरणशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।49।।

ॐ ह्रीं अस्तित्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।50।।

ॐ ह्रीं नास्तित्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।51।।

ॐ ह्रीं वस्तुत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।52।।

ॐ ह्रीं द्रव्यत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।53।।

ॐ ह्रीं प्रमेयत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।54।।

ॐ ह्रीं नित्यत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।55।।

ॐ ह्रीं अनित्यत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।56।।

ॐ ह्रीं नित्यानित्यत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।57।।

ॐ ह्रीं अभेदत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।58।।

ॐ ह्रीं भेदत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।59।।

ॐ ह्रीं अग्राहकत्वशक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।60।।

ॐ ह्रीं पारिणामिकत्व-शक्तियुक्त-श्रीसिद्ध.।।61।।

महार्घ्य

(द्रुतविलंबित छंद) (तर्ज-उदक चंदन तंदुल....)

प्रकट आत्म सुशक्ति करी विभो।
सुखद वैभव प्राप्त किया प्रभो।।
सकल शक्ति युता भवि हूजता।
प्रकट हो इस हेतु सुपूजता।।

ॐ ह्रीं आत्मशक्ति-संयुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

जाप्य- ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।।

शान्तये शान्तिधारा। दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अथ चतुर्थकोष्ठोपरि दिव्य-मंगल-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चतुर्थ पूजन

स्थापना

(वसंततिलका छंद) (तर्ज-भक्तामर-प्रणत मौलि....)

होवे सदा सुतप से शुभ प्राप्त ऋद्धी,
देती महा अतिशयी निषकांक्ष सिद्धी।
जो संयमी जन हुए शिव क्षेत्र वासी,
आह्वान नित्य करता निज आत्मवासी।।

ॐ ह्रीं ऋद्धिपरमफलयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं ऋद्धिपरमफलयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं ऋद्धिपरमफलयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम्।

92 ऋद्धि अर्घ्य मंत्रावली

बुद्धि ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं केवलज्ञान-ऋद्धि-परमफल-युक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः।।1।।

ॐ ह्रीं देशावधिज्ञान-ऋद्धि-परमफल-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।2।।

ॐ ह्रीं परमावधिज्ञान-ऋद्धि-परमफल-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वावधिज्ञान-ऋद्धि-परमफल-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।4।।

ॐ ह्रीं अनंतावधिज्ञान-ऋद्धि-परमफल-युक्ताय श्रश्रीसिद्ध.।।5।।

ॐ ह्रीं ऋजुमति-मनःपर्ययऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।6।।

ॐ ह्रीं विपुलमतिमनःपर्यय-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।7।।

ॐ ह्रीं बीजबुद्धि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।8।।

ॐ ह्रीं कोष्ठबुद्धि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।9।।

ॐ ह्रीं अनुसारी बुद्धि ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।10।।

ॐ ह्रीं प्रतिसारी बुद्धि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।11।।

ॐ ह्रीं उभयसारिणी-बुद्धि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।12।।

ॐ ह्रीं संभिन्न-संश्रोतृत्व-बुद्धि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।13।।

ॐ ह्रीं दूरस्वादित्व-बुद्धि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।14।।

ॐ ह्रीं दूरस्पर्शत्व-बुद्धि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।15।।

ॐ ह्रीं दूरघ्राणत्व बुद्धि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।16।।

ॐ ह्रीं दूरदर्शित्व-बुद्धि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।17।।

ॐ ह्रीं दूरश्रवणत्व-बुद्धि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।18।।

ॐ ह्रीं औत्पत्तिकी-प्रज्ञाश्रमणत्व-बुद्धिऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।19।।

ॐ ह्रीं पारिणामिकी-प्रज्ञाश्रमणत्व-बुद्धिऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।20।।

ॐ ह्रीं वैनयिकी-प्रज्ञाश्रमणत्व-बुद्धिऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।21।।

ॐ ह्रीं कर्मजा-प्रज्ञाश्रमणत्व-बुद्धिऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।22।।

ॐ ह्रीं वादित्व-बुद्धिऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।23।।

ॐ ह्रीं दशपूर्वित्व बुद्धिऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।24।।

ॐ ह्रीं चौदहपूर्वित्व-बुद्धिऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।25।।

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्ध-बुद्धिऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।26।।

ॐ ह्रीं प्रत्येक-बुद्धिऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।27।।

ॐ ह्रीं अष्टांगमहानिमित्त बुद्धिऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।28।।

ॐ ह्रीं अंगनिमित्तज्ञान-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।29।।

ॐ ह्रीं स्वरनिमित्तज्ञान-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।30।।

ॐ ह्रीं व्यंजननिमित्तज्ञान-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।31।।

ॐ ह्रीं छिन्ननिमित्तज्ञान-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।32।।

ॐ ह्रीं भौमनिमित्तज्ञान-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।33।।

ॐ ह्रीं लक्षणनिमित्तज्ञान-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।34।।

ॐ ह्रीं अंतरिक्षनिमित्तज्ञान-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।35।।

ॐ ह्रीं स्वप्ननिमित्तज्ञान-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।36।।

विक्रिया ऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं विक्रिया-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।37।।

ॐ ह्रीं अणिमा-विक्रियाऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।38।।

ॐ ह्रीं महिमा-विक्रियाऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।39।।

ॐ ह्रीं लघिमा-विक्रियाऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।40।।

ॐ ह्रीं गरिमा-विक्रियाऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।41।।

ॐ ह्रीं ईशत्व-विक्रियाऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।42।।

ॐ ह्रीं वशित्व-विक्रियाऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।43।।

ॐ ह्रीं कामरूपित्व-विक्रियाऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।44।।

ॐ ह्रीं अप्रतिघात-विक्रियाऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।45।।

ॐ ह्रीं अंतर्धान-विक्रियाऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।46।।

ॐ ह्रीं प्राप्ति-विक्रियाऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्री0सिद्ध.।।47।।

ॐ ह्रीं प्राकाम्य-विक्रियाऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।48।।

क्रियाऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं क्रियाचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।49।।

ॐ ह्रीं आकाशगामित्व-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।50।।

ॐ ह्रीं धाराचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।51।।

ॐ ह्रीं अग्निचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।52।।

ॐ ह्रीं मेघचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।53।।

ॐ ह्रीं मारुतचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।54।।

ॐ ह्रीं तंतुचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।55।।

ॐ ह्रीं फलचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।56।।

ॐ ह्रीं पुष्पचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।57।।

ॐ ह्रीं पत्रचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।58।।

ॐ ह्रीं बीजचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।59।।

ॐ ह्रीं जलचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।60।।

ॐ ह्रीं जंघाचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।61।।

ॐ ह्रीं नभचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।62।।

ॐ ह्रीं श्रेणीचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।63।।

ॐ ह्रीं ज्योतिषचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।64।।

ॐ ह्रीं धूमचारण-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।65।।

तपऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं उग्रोग्र-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।66।।

ॐ ह्रीं अवस्थितोग्र-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।67।।

ॐ ह्रीं घोरतप-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।68

ॐ ह्रीं घोरपराक्रम-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।69।।

ॐ ह्रीं अघोरब्रह्मचर्य-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।70।।

ॐ ह्रीं दीप्ततप-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।71।।

ॐ ह्रीं तप्ततप-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।72।।

ॐ ह्रीं महातप-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।73।।

बलऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं मनोबल-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।74।।

ॐ ह्रीं वचनबल-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।75।।

ॐ ह्रीं कायबल-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।76।।

औषधिऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं आमर्षौषधि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।77।।

ॐ ह्रीं क्ष्वेलौषधि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।78।।

ॐ ह्रीं जल्लौषधि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।79।।

ॐ ह्रीं मलौषधि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।80।।

ॐ ह्रीं विष्टौषधि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।81।।

ॐ ह्रीं सर्वौषधि-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।82।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविष-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।83।।

ॐ ह्रीं आशीनिर्विष-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।84।।

रसऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं आशीर्विष-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।85।।

ॐ ह्रीं दृष्टिविष-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।86।।

ॐ ह्रीं क्षीरस्रावी-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।87।।

ॐ ह्रीं मधुस्रावी-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।88।।

ॐ ह्रीं सर्पिस्रावी-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।89।।

ॐ ह्रीं अमृतस्रावी-ऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।90।।

अक्षीणऋद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानसऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।91।।

ॐ ह्रीं अक्षीणमहालयऋद्धि-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।92।।

महार्घ्य

(लोलतरंग छंद) (तर्ज-चालीसा चाल)

ऋद्धि सु तप से आप लही थी, छोड़ उसे निधि सिद्धि गही थी।
सिद्ध सदा निज चित्त बसाता, अर्घ्य चढ़ा शिव के गुण गाता।।

ॐ ह्रीं ऋद्धिपरमफलयुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शान्तये शान्तिधारा ।। दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य-ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।

(अथ पंचम-कोष्ठोपरि-दिव्य-मंगल-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचम पूजन

स्थापना

(शिखरिणी छंद) (तर्ज-महावीर स्वामी नयन पथगामी....)

शिवालै[1] के वासी अधिकरण हीना निज रहें।
निरोधें कर्मों को तिस जिनवरा संवर कहें।।
कृतादी संरंभादिक वचन योगादि सकला।
नशे क्रोधादी भी हुए तन विहीना सु निकला।।

ॐ ह्रीं जीवाजीवाधिकरणमुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं जीवाजीवाधिकरणमुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं जीवाजीवाधिकरणमुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

जीवाजीवाधिकरण मुक्त 123 अर्घ्य मंत्रावली

ॐ ह्रीं सर्वकर्मास्रवमुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः।।1।।

ॐ ह्रीं जीवाजीवाधिकरण-मुक्ताय श्रीसिद्ध.।।2।।

ॐ ह्रीं अजीवाधिकरण-मुक्ताय श्रीसिद्ध.।।3।।

ॐ ह्रीं मूलगुणनिर्वर्तना-मुक्ताय श्रीसिद्ध.।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तरगुणनिर्वर्तना-मुक्ताय श्रीसिद्ध.।।5।।

ॐ ह्रीं अप्रत्यक्षवेक्षितनिक्षेप-मुक्ताय श्रीसिद्ध.।।6।।

ॐ ह्रीं दुःप्रमृष्टनिक्षेप-मुक्ताय श्रीसिद्ध.।।7।।

---

1. सिद्धालय

ॐ ह्रीं सहसानिक्षेपमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।8।।

ॐ ह्रीं अनाभोगनिक्षेपमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।9।।

ॐ ह्रीं भक्तपानसंयोगमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।10।।

ॐ ह्रीं उपकरणसंयोगमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।11।।

ॐ ह्रीं कायनिसर्गमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।12।।

ॐ ह्रीं वचननिसर्गमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।13।।

ॐ ह्रीं मनःनिसर्गमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।14।।

ॐ ह्रीं जीवाधिकरणमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।15।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।16।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।17।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतकाय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।18।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।19।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।20।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितकाय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।21।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।22।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।23।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकाय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।24।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।25।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचन-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।26।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतकाय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।27।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।28।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचन-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।29।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितकाय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।30।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।31।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमत-वचन-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।32।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमत-काय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।33।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतमनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।34।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतवचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।35।।

ॐ ह्रीं क्रोधकृतकायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।36।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितमनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।37।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितवचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।38।।

ॐ ह्रीं क्रोधकारितकायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।39।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतमनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।40।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतवचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।41।।

ॐ ह्रीं क्रोधानुमतकायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।42।।

ॐ ह्रीं मानकृत-मनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।43।।

ॐ ह्रीं मानकृत-वचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।44।।

ॐ ह्रीं मानकृत-काय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।45।।

ॐ ह्रीं मानकारित-मनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।46।।

ॐ ह्रीं मानकारित-वचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।47।।

ॐ ह्रीं मानकारित-काय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।48।।

ॐ ह्रीं मानानुमत-मनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।49।।

ॐ ह्रीं मानानुमत-वचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।50।।

ॐ ह्रीं मानानुमत-काय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।51।।

ॐ ह्रीं मानकृत-मनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।52।।

ॐ ह्रीं मानकृत-वचन-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।53।।

ॐ ह्रीं मानकृत-काय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।54।।

ॐ ह्रीं मानकारित-मनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।55।।

ॐ ह्रीं मानकारित-वचन-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।56।।

ॐ ह्रीं मानकारित-काय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।57।।

ॐ ह्रीं मानानुमत-मनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।58।।

ॐ ह्रीं मानानुमत-वचन-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।59।।

ॐ ह्रीं मानानुमत-काय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।60।।

ॐ ह्रीं मानकृत-मनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।61।।

ॐ ह्रीं मानकृत-वचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।62।।

ॐ ह्रीं मानकृत-कायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।63।।

ॐ ह्रीं मानकारित-मनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।64।।

ॐ ह्रीं मानकारित-वचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।65।।

ॐ ह्रीं मानकारित-कायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।66।।

ॐ ह्रीं मानानुमत-मनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।67।।

ॐ ह्रीं मानानुमत-वचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।68।।

ॐ ह्रीं मानानुमत-कायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।69।।

ॐ ह्रीं मायाकृत-मनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।70।।

ॐ ह्रीं मायाकृत-वचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।71।।

ॐ ह्रीं मायाकृत-काय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।72।।

ॐ ह्रीं मायाकारित-मनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।73।।

ॐ ह्रीं मायाकारित-वचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।74।।

ॐ ह्रीं मायाकारित-काय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।75।।

ॐ ह्रीं मायानुमत-मनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।76।।

ॐ ह्रीं मायानुमत-वचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।77।।

ॐ ह्रीं मायानुमत-काय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।78।।

ॐ ह्रीं मायाकृत-मनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।79।।

ॐ ह्रीं मायाकृत-वचनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।80।।

ॐ ह्रीं मायाकृत-काय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।81।।

ॐ ह्रीं मायाकारित-मनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।82।।

ॐ ह्रीं मायाकारित-वचन-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।83।।

ॐ ह्रीं मायाकारित-काय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।84।।

ॐ ह्रीं मायानुमत-मनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।85।।

ॐ ह्रीं मायानुमत-वचन-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।86।।

ॐ ह्रीं मायानुमत-काय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।87।।

ॐ ह्रीं मायाकृत-मनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।88।।

ॐ ह्रीं मायाकृत-वचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।89।।

ॐ ह्रीं मायाकृत-कायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।90।।

ॐ ह्रीं मायाकारित-मनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।91।।

ॐ ह्रीं मायाकारित-वचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।92।।

ॐ ह्रीं मायाकारित-कायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।93।।

ॐ ह्रीं मायानुमत-मनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।94।।

ॐ ह्रीं मायानुमत-वचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।95।।

ॐ ह्रीं मायानुमत-कायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।96।।

ॐ ह्रीं लोभकृत-मनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।97।।

ॐ ह्रीं लोभकृत-वचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।98।।

ॐ ह्रीं लोभकृत-काय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।99।।

ॐ ह्रीं लोभकारित-मनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।100।।

ॐ ह्रीं लोभकारित-वचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।101।।

ॐ ह्रीं लोभकारित-काय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।102।।

ॐ ह्रीं लोभानुमत-मनः संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।103।।

ॐ ह्रीं लोभानुमत-वचन-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।104।।

ॐ ह्रीं लोभानुमत-काय-संरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।105।।

ॐ ह्रीं लोभकृत-मनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।106।।

ॐ ह्रीं लोभकृत-वचन-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।107।।

ॐ ह्रीं लोभकृत-काय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।108।।

ॐ ह्रीं लोभकारित-मनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।109।।

ॐ ह्रीं लोभकारित-वचन-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।110।।

ॐ ह्रीं लोभकारित-काय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।111।।

ॐ ह्रीं लोभानुमत-मनः समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।112।।

ॐ ह्रीं लोभानुमत-वचन-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।113।।

ॐ ह्रीं लोभानुमत-काय-समारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।114।।

ॐ ह्रीं लोभकृत-मनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।115।।

ॐ ह्रीं लोभकृत-वचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।116।।

ॐ ह्रीं लोभकृत-कायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।117।।

ॐ ह्रीं लोभकारित-मनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।118।।

ॐ ह्रीं लोभकारित-वचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।119।।

ॐ ह्रीं लोभकारित-कायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।120।।

ॐ ह्रीं लोभानुमत-मनः आरम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।121।।

ॐ ह्रीं लोभानुमत-वचनारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।122।।

ॐ ह्रीं लोभानुमत-कायारम्भमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।123।।

महार्घ्य

(नरेन्द्र छंद)

थान अयोग केवली माँही, कर्मास्रव सब रुकता।
लघु अंतरमुहुरत में अर्हत्, हो जाते शिवमुक्ता।।
करण योग आरंभादी तज, सब कषाय को त्यागा।
ऐसे सिद्धों का अर्चन कर, पुण्य उदय मम जागा।।

ॐ ह्रीं जीवाजीवाधिकरणमुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तये शान्तिधारा ।। दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य–ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।।

(अथ षष्टम-कोष्ठोपरि-दिव्य-मंगल-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

षष्टम पूजन

स्थापना

(मधुमालती छंद) (तर्ज- शांतिनाथ जिनेन्द्र तेरे पद युगल...)

विधि बंध हो मिथ्यात्व से, आतम रुले भवताप से।
विधि मोह अरु अज्ञान से, पीड़ित सदा दुखघाम से॥
नशने करम शुभ भाव से, मैं पूजता जिन चाव से।
मम उरकमल पद तिष्ठिये, जिनवर बुलाता भाव से॥

(दोहा)

आह्वानन शिवराज का, करता चित्त विशेष।
भावों से जिन पूजकर, कर्म रहे ना शेष॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्मरहित-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मरहित-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्

ॐ ह्रीं सर्वकर्मरहित-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

सर्वकर्मरहित 148 अर्घ्य मंत्रावली

ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरण-कर्मरहिताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः।।1।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानावरण-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।2।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञानावरण-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।3।।

ॐ ह्रीं मनःपर्ययज्ञानावरण-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।4।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानावरण-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।5।।

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शनावरण-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।6।।

ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शनावरण-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।7।।

ॐ ह्रीं अवधिदर्शनावरण-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।8।।

ॐ ह्रीं केवलदर्शनावरण-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।9।।

ॐ ह्रीं निद्रा-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।10।।

ॐ ह्रीं निद्रा-निद्रा-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।11।।

ॐ ह्रीं प्रचला-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।12।।

ॐ ह्रीं प्रचला-प्रचला-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।13।।

ॐ ह्रीं स्त्यानगृद्धि-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।14।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।15।।

ॐ ह्रीं सम्यग्मिथ्यात्व-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।16।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-प्रकृति-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।17।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धि-क्रोध-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।18।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धि-मान-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।19।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धि-माया-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।20।।

ॐ ह्रीं अनन्तानुबन्धि-लोभ-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।21।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान-क्रोध-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।22।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान-मान-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।23।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान-माया-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।24।।

ॐ ह्रीं अप्रत्याख्यान-लोभ-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।25।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान-क्रोध-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।26।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान-मान-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।27।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान-माया-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।28।।

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यान-लोभ-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।29।।

ॐ ह्रीं संज्वलन-क्रोध-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।30।।

ॐ ह्रीं संज्वलन-मान-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।31।।

ॐ ह्रीं संज्वलन-माया-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।32।।

ॐ ह्रीं संज्वलन-लोभ-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।33।।

ॐ ह्रीं हास्य-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।34।।

ॐ ह्रीं रति-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।35।।

ॐ ह्रीं अरति-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।36।।

ॐ ह्रीं शोक-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।37।।

ॐ ह्रीं भय-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।38।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।39।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।40।।

ॐ ह्रीं पुरुषवेद-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।41।।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।42।।

ॐ ह्रीं दानान्तराय-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।43।।

ॐ ह्रीं लाभान्तराय-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।44।।

ॐ ह्रीं भोगान्तराय-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।45।।

ॐ ह्रीं उपभोगान्तराय-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।46।।

ॐ ह्रीं वीर्यान्तराय-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।47।।

ॐ ह्रीं सातावेदनीय-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।48।।

ॐ ह्रीं असातावेदनीय-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।49।।

ॐ ह्रीं मनुष्यायु-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।50।।

ॐ ह्रीं देवायु-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।51।।

ॐ ह्रीं नरकायु-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।52।।

ॐ ह्रीं तिर्यंचायु-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।53।।

ॐ ह्रीं देवगतिनाम-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।54।।

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिनाम-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।55।।

ॐ ह्रीं तिर्यंचगतिनाम-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।56।।

ॐ ह्रीं नरकगतिनाम-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।57।।

ॐ ह्रीं एकेन्द्रिय-जातिनाम-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।58।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय-जातिनाम-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।59।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय-जातिनाम-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।60।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय-जातिनाम-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।61।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रिय-जातिनाम-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।62।।

ॐ ह्रीं औदारिकशरीर-नामकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।63।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकशरीर-नामकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।64।।

ॐ ह्रीं आहारकशरीर-नामकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।65।।

ॐ ह्रीं तैजसशरीर-नामकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।66।।

ॐ ह्रीं कार्माणशरीर-नामकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।67।।

ॐ ह्रीं औदारिक-अंगोपाङ्गनाम-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।68।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिक-अंगोपाङ्ग-नामकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।69।।

ॐ ह्रीं आहारक-अंगोपाङ्गनाम-कर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।70।।

ॐ ह्रीं निर्माण-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।71।।

ॐ ह्रीं औदारिकबंधन-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।72।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकबंधन-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।73।।

ॐ ह्रीं आहारकबंधन-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।74।।

ॐ ह्रीं तैजसबंधन-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।75।।

ॐ ह्रीं कार्माणबंधन-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।76।।

ॐ ह्रीं औदारिकसंघात-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।77।।

ॐ ह्रीं वैक्रियिकसंघात-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।78।।

ॐ ह्रीं आहारकसंघात-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।79।।

ॐ ह्रीं तैजससंघात-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।80।।

ॐ ह्रीं कार्माणसंघात-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।81।।

ॐ ह्रीं समचतुरस्र-संस्थान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।82।।

ॐ ह्रीं न्यग्रोधपरिमण्डलसंस्थान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।83।।

ॐ ह्रीं स्वाति-संस्थान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।84।।

ॐ ह्रीं कुब्जक-संस्थान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।85।।

ॐ ह्रीं वामन-संस्थान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।86।।

ॐ ह्रीं हुण्डक-संस्थान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।87।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच-संहनन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।88।।

ॐ ह्रीं वज्रनाराच-संहनन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।89।।

ॐ ह्रीं नाराच-संहनन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।90।।

ॐ ह्रीं अर्द्धनाराच-संहनन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।91।।

ॐ ह्रीं कीलक-संहनन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।92।।

ॐ ह्रीं असंप्राप्तसृपाटिका-संहनन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।93।।

ॐ ह्रीं कर्कशस्पर्श-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।94।।

ॐ ह्रीं मृदुत्वस्पर्श–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।95।।

ॐ ह्रीं स्निग्धस्पर्श–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।96।।

ॐ ह्रीं रुक्षस्पर्श–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।97।।

ॐ ह्रीं शीतस्पर्श–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।98।।

ॐ ह्रीं उष्णस्पर्श–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।99।।

ॐ ह्रीं गुरुस्पर्श–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।100।।

ॐ ह्रीं लघुस्पर्श–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।101।।

ॐ ह्रीं तिक्तरस–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।102।।

ॐ ह्रीं कटुकरस–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।103।।

ॐ ह्रीं कषायरस–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।104।।

ॐ ह्रीं मधुररस–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।105।।

ॐ ह्रीं आम्लरस–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।106।।

ॐ ह्रीं सुगन्ध–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।107।।

ॐ ह्रीं दुर्गन्ध–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।108।।

ॐ ह्रीं श्वेतवर्ण–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।109।।

ॐ ह्रीं नीलवर्ण–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।110।।

ॐ ह्रीं कृष्णवर्ण–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।111।।

ॐ ह्रीं रक्तवर्ण–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।112।।

ॐ ह्रीं पीतवर्ण–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।113।।

ॐ ह्रीं नरकगत्यानुपूर्वी–नामकर्म रहिताय श्रीसिद्ध.।।114।।

ॐ ह्रीं देवगत्यानुर्वी–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।115।।

ॐ ह्रीं मनुष्यगत्यानुपूर्वी–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।116।।

ॐ ह्रीं तिर्यग्गत्यानुपूर्वी–नामकर्म–रहिताय श्रीसिद्ध.।।117।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्व-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।118।।

ॐ ह्रीं उपघात-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।119।।

ॐ ह्रीं परघात-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।120।।

ॐ ह्रीं आतप-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।121।।

ॐ ह्रीं उद्योत-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।122।।

ॐ ह्रीं उच्छ्वासनि:स्वास-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।123।।

ॐ ह्रीं प्रशस्तविहायोगति-नामकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।124।।

ॐ ह्रीं अप्रशस्तविहायोगति-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।125।।

ॐ ह्रीं प्रत्येकशरीर-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।126।।

ॐ ह्रीं साधारणशरीर-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।127।।

ॐ ह्रीं त्रस-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।128।।

ॐ ह्रीं स्थावर-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।129।।

ॐ ह्रीं सुभग-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।130।।

ॐ ह्रीं दुर्भग-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।131।।

ॐ ह्रीं सुस्वर-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।132।।

ॐ ह्रीं दु:स्वर-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।133।।

ॐ ह्रीं शुभ-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।134।।

ॐ ह्रीं अशुभ-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।135।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्म-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।136।।

ॐ ह्रीं बादर-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।137।।

ॐ ह्रीं पर्याप्त-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।138।।

ॐ ह्रीं अपर्याप्त-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।139।।

ॐ ह्रीं स्थिर-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।140।।

ॐ ह्रीं अस्थिर-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।141।।

ॐ ह्रीं आदेय-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।142।।

ॐ ह्रीं अनादेय-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।143।।

ॐ ह्रीं यशःकीर्ति-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।144।।

ॐ ह्रीं अयशःकीर्ति-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।145।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरप्रकृति-नामकर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।146।।

ॐ ह्रीं उच्चगोत्र-कर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।147।।

ॐ ह्रीं नीचगोत्र-कर्म-रहिताय श्रीसिद्ध.।।148।।

महार्घ्य

(उल्लाला छंद)

अड़तालिसउत्तर एक शत, सब कर्म प्रकृति करि नाश।
सिद्धालय में प्रभु जा बसे, नित पूजें जिन अविनाश।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मरहिताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शान्तये शान्तिधारा ।। दिव्य-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः ।।

(अथ सप्तम-कोष्ठोपरि-दिव्य-मंगल-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

सप्तम पूजन

स्थापना

(त्रिभंगी छंद)

शिव मुक्तीकंता, सिद्धमहंता, शिव भगवंता अविकारी।
सिद्धों का अर्चन, नितप्रति चर्चन, तव पद वंदन बलिहारी॥
जिन तुमे बुलाऊँ, तव गुण ध्याऊँ, पूज रचाऊँ हितकारी।
पर द्रव्य उदासी, शिवपुरवासी, स्वात्मनिवासी अघहारी॥

ॐ ह्रीं अनंतगुणयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं अनंतगुणयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अनंतगुणयुक्त-श्रीसिद्धचक्राधिपति! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणम्।

परमगुणयुक्त 260 अर्घ्य मंत्रावली

ॐ ह्रीं अर्हदरिजिताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः।।1।।

ॐ ह्रीं सिद्धारिजिताय श्रीसिद्ध.।।2।।

ॐ ही सूर्यरिजिताय श्रीसिद्ध.।।3।।

ॐ ह्रीं पाठकारिजिताय श्रीसिद्ध.।।4।।

ॐ ह्रीं साध्वरिजिताय श्रीसिद्ध.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाय श्रीसिद्ध.।।6।।

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलाय श्रीसिद्ध.।।7।।

ॐ ह्रीं सूरिमंगलाय श्रीसिद्ध.।।8।।

ॐ ह्रीं पाठकमंगलाय श्रीसिद्ध.।।9।।

ॐ ह्रीं साधुमंगलाय श्रीसिद्ध.।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हतोत्तमाय श्रीसिद्ध.।।11।।

ॐ ह्रीं सिद्धोत्तमाय श्रीसिद्ध.।।12।।

ॐ ह्रीं सूर्युत्तमाय श्रीसिद्ध.।।13।।

ॐ ह्रीं पाठकोत्तमाय श्रीसिद्ध.।।14।।

ॐ ह्री साधूत्तमाय श्रीसिद्ध.।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय श्रीसिद्ध.।।16।।

ॐ ह्रीं सिद्धशरणाय श्रीसिद्ध.।।17।।

ॐ ह्रीं सूरि-शरणाय श्रीसिद्ध.।।18।।

ॐ ह्रीं पाठक-शरणाय श्रीसिद्ध.।।19।।

ॐ ह्रीं साधु-शरणाय श्रीसिद्ध.।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-स्वात्मशरणाय श्रीसिद्ध.।।21।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वात्मशरणाय श्रीसिद्ध.।।22।।

ॐ ह्रीं सूरि-स्वात्मशरणाय श्रीसिद्ध.।।23।।

ॐ ह्रीं पाठक-स्वात्मशरणाय श्रीसिद्ध.।।24।।

ॐ ह्रीं साधु-स्वात्मशरणाय श्रीसिद्ध.।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-चैतन्यगुणाय श्रीसिद्ध.।।26।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-चैतन्यगुणाय श्रीसिद्ध.।।27।।

ॐ ह्रीं सूरि-चैतन्यगुणाय श्रीसिद्ध.।।28।।

ॐ ह्रीं पाठक-चैतन्यगुणाय श्रीसिद्ध.।।29।।

ॐ ह्रीं साधु-चैतन्यगुणाय श्रीसिद्ध.।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-सद्दर्शनाय श्रीसिद्ध.।।31।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-सद्दर्शनाय श्रीसिद्ध.।।32।।

ॐ ह्रीं सूरि-सद्दर्शनाय श्रीसिद्ध.।।33।।

ॐ ही पाठक-सद्दर्शनाय श्रीसिद्ध.।।34।।

ॐ ह्रीं साधु-सद्दर्शनाय श्रीसिद्ध.।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-स्वात्मवर्तनाय श्रीसिद्ध.।।36।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वात्मवर्तनाय श्रीसिद्ध.।।37।।

ॐ ह्रीं सूरि-स्वात्मवर्तनाय श्रीसिद्ध.।।38।।

ॐ ह्रीं पाठक-स्वात्मवर्तनाय श्रीसिद्ध.।।39।।

ॐ ह्रीं साधु-स्वात्मवर्तनाय श्रीसिद्ध.।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-स्वात्मविभवाय श्रीसिद्ध.।।41।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वात्मविभवाय श्रीसिद्ध.।।42।।

ॐ ह्रीं सूरि-स्वात्मविभवाय श्रीसिद्ध.।।43।।

ॐ ह्रीं पाठक-स्वात्मविभवाय श्रीसिद्ध.।।44।।

ॐ ह्रीं साधु-स्वात्मविभवाय श्रीसिद्ध.।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मूलगुणाय श्रीसिद्ध.।।46।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-मूलगुणाय श्रीसिद्ध.।।47।।

ॐ ह्रीं सूरि-मूलगुणाय श्रीसिद्ध.।।48।।

ॐ ह्रीं पाठकमूलगुणाय श्रीसिद्ध.।।49।।

ॐ ह्रीं साधु-मूलगुणाय श्रीसिद्ध.।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हदुत्तरगुणाय श्रीसिद्ध.।।51।।

ॐ ह्रीं सिद्धोत्तरगुणाय श्रीसिद्ध.।।52।।

ॐ ह्रीं सूर्युत्तरगुणाय श्रीसिद्ध.।।53।।

ॐ ह्रीं पाठकोत्तरगुणाय श्रीसिद्ध.।।54।।

ॐ ह्रीं साधूत्तरगुणाय श्रीसिद्ध.।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-सज्ज्ञानगुणाय श्रीसिद्ध.।।56।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-सज्ज्ञानगुणाय श्रीसिद्ध.।।57।।

ॐ ह्रीं सूरि-सज्ज्ञानगुणाय श्रीसिद्ध.।।58।।

ॐ ह्रीं पाठक-सज्ज्ञानगुणाय श्रीसिद्ध.।।59।।

ॐ ह्रीं साधु-सज्ज्ञानगुणाय श्रीसिद्ध.।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-स्वभावयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।61।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वभावयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।62।।

ॐ ह्रीं सूरि-स्वभावयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।63।।

ॐ ह्रीं पाठक-स्वभावयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।64।।

ॐ ह्रीं साधु-स्वभावयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-शुद्धगुण-प्रकटाय श्रीसिद्ध.।।66।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-शुद्धगुण-प्रकटाय श्रीसिद्ध.।।67।।

ॐ ह्रीं सूरि-शुद्धगुण-प्रकटाय श्रीसिद्ध.।।68।।

ॐ ह्रीं पाठक-शुद्धगुण-प्रकटाय श्रीसिद्ध.।।69।।

ॐ ह्रीं साधु-शुद्धगुण-प्रकटाय श्रीसिद्ध.।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हद्-भवभ्रमण-निवारकाय श्रीसिद्ध.।।71।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-भवभ्रमण-निवारकाय श्रीसिद्ध.।।72।।

ॐ ह्रीं सूरि-भवभ्रमण-निवारकाय श्रीसिद्ध.।।73।।

ॐ ह्रीं पाठक-भवभ्रमण-निवारकाय श्रीसिद्ध.।।74।।

ॐ ह्री साधु-भवभ्रमण-निवारकाय श्रीसिद्ध.।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हदंतरसुस्थिताय श्रीसिद्ध.।।76।।

ॐ ह्रीं सिद्धांतरसुस्थिताय श्रीसिद्ध.।।77।।

ॐ ह्रीं सूर्यंतरसुस्थिताय श्रीसिद्ध.।।78।।

ॐ ह्रीं पाठकांतरसुस्थिताय श्रीसिद्ध.।।79।।

ॐ ह्रीं साध्वंतरसुस्थिताय श्रीसिद्ध.।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हद्-भवान्तकाय श्रीसिद्ध.।।81।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-भवान्तकाय श्रीसिद्ध.।।82।।

ॐ ह्रीं सूरि-भवान्तकाय श्रीसिद्ध.।।83।।

ॐ ह्रीं पाठक-भवान्तकाय श्रीसिद्ध.।।84।।

ॐ ह्रीं साधु-भवान्तकाय श्रीसिद्ध.।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-कषाय-विगलिताय श्रीसिद्ध.।।86।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-कषाय-विगलिताय श्रीसिद्ध.।।87।।

ॐ ह्रीं सूरि-कषाय-विगलिताय श्रीसिद्ध.।।88।।

ॐ ह्रीं पाठक-कषाय-विगलिताय श्रीसिद्ध.।।89।।

ॐ ह्रीं साधु-कषाय-विगलिताय श्रीसिद्ध.।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हद्-मोहध्वंसकाय श्रीसिद्ध.।।91।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-मोहध्वंसकाय श्रीसिद्ध.।।92।।

ॐ ह्रीं सूरि-मोहध्वंसकाय श्रीसिद्ध.।।93।।

ॐ ह्रीं पाठक-मोहध्वंसकाय श्रीसिद्ध.।।94।।

ॐ ह्रीं साधु-मोहध्वंसकाय श्रीसिद्ध.।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हन्निर्मल-परिणामाय श्रीसिद्ध.।।96।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-निर्मल-परिणामाय श्रीसिद्ध.।।97।।

ॐ ह्रीं सूरि-निर्मल-परिणामाय श्रीसिद्ध.।।98।।

ॐ ह्रीं पाठक-निर्मल-परिणामाय श्रीसिद्ध.।।99।।

ॐ ह्रीं साधु-निर्मल-परिणामाय श्रीसिद्ध.।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-पंचपरावर्तनमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।101।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-पंचपरावर्तनमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।102।।

ॐ ह्रीं सूरि-पंचपरावर्तनमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।103।।

ॐ ह्रीं पाठक-पंचपरावर्तनमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।104।।

ॐ ह्रीं साधु-पंचपरावर्तनविमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-पंचाक्ष-विषयजिताय श्रीसिद्ध.।।106।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-पंचाक्ष-विषयजिताय श्रीसिद्ध.।।107।।

ॐ ह्रीं सूरि-पंचाक्ष-विषयजिताय श्रीसिद्ध.।।108।।

ॐ ह्रीं पाठक-पंचाक्ष-विषयजिताय श्रीसिद्ध.।।109।।

ॐ ह्रीं साधु-पंचाक्ष-विषयजिताय श्रीसिद्ध.।।110।।

ॐ ह्रीं अर्हन्निजात्मजिनाय श्रीसिद्ध.।।111।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-निजात्मजिनाय श्रीसिद्ध.।।112।।

ॐ ह्रीं सूरि-निजात्मजिनाय श्रीसिद्ध.।।113।।

ॐ ह्रीं पाठक-निजात्मजिनाय श्रीसिद्ध.।।114।।

ॐ ह्रीं साधु-निजात्मजिनाय श्रीसिद्ध.।।115।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-परचक्रप्रभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।116।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-परचक्रप्रभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।117।।

ॐ ह्रीं सूरि-परचक्रप्रभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।118।।

ॐ ह्रीं पाठक-परचक्रप्रभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।119।।

ॐ ह्रीं साधु-परचक्रप्रभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।120।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-स्वचतुष्टय-शोभिताय श्रीसिद्ध.।।121।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वचतुष्टय-शोभिताय श्रीसिद्ध.।।122।।

ॐ ह्रीं सूरि-स्वचतुष्टय-शोभिताय श्रीसिद्ध.।।123।।

ॐ ह्रीं पाठक-स्वचतुष्टय-शोभिताय श्रीसिद्ध.।।124।।

ॐ ह्रीं साधु-स्वचतुष्टय-शोभिताय श्रीसिद्ध.।।125।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-स्वात्मानंदाय श्रीसिद्ध.।।126।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वात्मानंदाय श्रीसिद्ध.।।127।।

ॐ ह्रीं सूरि-स्वात्मानंदाय श्रीसिद्ध.।।128।।

ॐ ह्रीं पाठक-स्वात्मानंदाय श्रीसिद्ध.।।129।।

ॐ ह्रीं साधु-स्वात्मानंदाय श्रीसिद्ध.।।130।।

ॐ ह्रीं अर्हन्मनोविजिताय श्रीसिद्ध.।।131।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-मनोविजिताय श्रीसिद्ध.।।132।।

ॐ ह्रीं सूरि-मनोविजिताय श्रीसिद्ध.।।133।।

ॐ ह्रीं पाठक-मनोविजिताय श्रीसिद्ध.।।134।।

ॐ ह्रीं साधु-मनोविजिताय श्रीसिद्ध.।।135।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-परमसंवराय श्रीसिद्ध.।।136।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-परमसंवराय श्रीसिद्ध.।।137।।

ॐ ह्रीं सूरि-परमसंवराय श्रीसिद्ध.।।138।।

ॐ ह्रीं पाठक-परमसंवराय श्रीसिद्ध.।।139।।

ॐ ह्रीं साधु-परमसंवराय श्रीसिद्ध.।।140।।

ॐ ह्रीं अर्हन्महातपफलाय श्रीसिद्ध.।।141।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-महातपफलाय श्रीसिद्ध.।।142।।

ॐ ह्रीं सूरि-महातपफलाय श्रीसिद्ध.।।143।।

ॐ ह्रीं पाठक-महातपफलाय श्रीसिद्ध.।।144।।

ॐ ह्रीं साधु-महातपफलाय श्रीसिद्ध.।।145।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-परमनिर्जराय श्रीसिद्ध.।।146।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-परमनिर्जराय श्रीसिद्ध.।।147।।

ॐ ह्रीं सूरि-परमनिर्जराय श्रीसिद्ध.।।148।।

ॐ ह्रीं पाठक-परमनिर्जराय श्रीसिद्ध.।।149।।

ॐ ह्रीं साधु-परमनिर्जराय श्रीसिद्ध.।।150।।

ॐ ह्रीं अर्हदखंडचिद्निकाय श्रीसिद्ध.।।151।।

ॐ ह्रीं सिद्धाखंडचिद्निकाय श्रीसिद्ध.।।152।।

ॐ ह्रीं सूर्यखंडचिद्निकाय श्रीसिद्ध.।।153।।

ॐ ह्रीं पाठकाखंडचिद्निकाय श्रीसिद्ध.।।154।।

ॐ ह्रीं साध्वखंडचिद्निकाय श्रीसिद्ध.।।155।।

ॐ ह्रीं अर्हदुत्कृष्ट-भोगसम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।156।।

ॐ ह्रीं सिद्धोत्कृष्ट-भोगसम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।157।।

ॐ ह्रीं सूर्युत्कृष्ट-भोगसम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।158।।

ॐ ह्रीं पाठकोत्कृष्ट-भोगसम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।159।।

ॐ ह्रीं साध्वुत्कृष्ट-भोगसम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।160।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-परीत-संसाराय श्रीसिद्ध.।।161।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-परीत-संसाराय श्रीसिद्ध.।।162।।

ॐ ह्रीं सूरि-परीत-संसाराय श्रीसिद्ध.।।163।।

ॐ ह्रीं पाठक-परीत-संसाराय श्रीसिद्ध.।।164।।

ॐ ह्रीं साधु-परीत-संसाराय श्रीसिद्ध.।।165।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-स्वपर-हितंकराय श्रीसिद्ध.।।166।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वपर-हितंकराय श्रीसिद्ध.।।167।।

ॐ ह्रीं सूरि-स्वपर-हितंकराय श्रीसिद्ध.।।168।।

ॐ ह्रीं पाठक-स्वपर-हितंकराय श्रीसिद्ध.।।169।।

ॐ ह्रीं साधु-स्वपर-हितंकराय श्रीसिद्ध.।।170।।

ॐ ह्रीं अर्हदचलशील-सम्मुखाय श्रीसिद्ध.।।171।।

ॐ ह्रीं सिद्धाचलशील-सम्मुखाय श्रीसिद्ध.।।172।।

ॐ ह्रीं सूर्यचलशील-सम्मुखाय श्रीसिद्ध.।।173।।

ॐ ह्रीं पाठकाचलशील-सम्मुखाय श्रीसिद्ध.।।174।।

ॐ ह्रीं साध्वाचलशील-सम्मुखाय श्रीसिद्ध.।।175।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-स्वपरहितोपलब्धि-प्रदायकाय श्रीसिद्ध.।।176।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वपरहितोपलब्धि-प्रदायकाय श्रीसिद्ध.।।177।।

ॐ ह्रीं सूरि-स्वपरहितोपलब्धि-प्रदायकाय श्रीसिद्ध.।।178।।

ॐ ह्रीं पाठक-स्वपरहितोपलब्धि-प्रदायकाय श्रीसिद्ध.।।179।।

ॐ ह्रीं साधु-स्वपरहितोपलब्धि-प्रदायकाय श्रीसिद्ध.।।180।।

ॐ ह्रीं अर्हदक्षीणगुणाप्रतिघाताय श्रीसिद्ध.।।181।।

ॐ ह्रीं सिद्धाक्षीणगुणाप्रतिघाताय श्रीसिद्ध.।।182।।

ॐ ह्रीं सूर्यक्षीणगुणाप्रतिघाताय श्रीसिद्ध.।।183।।

ॐ ह्रीं पाठकाक्षीणगुणाप्रतिघाताय श्रीसिद्ध.।।184।।

ॐ ह्रीं साध्वाक्षीणगुणाप्रतिघाताय श्रीसिद्ध.।।185।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-शुद्धस्वभावप्रवृत्ताय श्रीसिद्ध.।।186।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-शुद्धस्वभावप्रवृत्ताय श्रीसिद्ध.।।187।।

ॐ ह्रीं सूरि-शुद्धस्वभावप्रवृत्ताय श्रीसिद्ध.।।188।।

ॐ ह्रीं पाठक-शुद्धस्वभावप्रवृत्ताय श्रीसिद्ध.।।189।।

ॐ ह्रीं साधु-शुद्धस्वभावप्रवृत्ताय श्रीसिद्ध.।।190।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-परद्रव्याकांक्षा-विमुखाय श्रीसिद्ध.।।191।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-परद्रव्याकांक्षा-विमुखाय श्रीसिद्ध.।।192।।

ॐ ह्रीं सूरि-परद्रव्याकांक्षा-विमुखाय श्रीसिद्ध.।।193।।

ॐ ह्रीं पाठक-परद्रव्याकांक्षा-विमुखाय श्रीसिद्ध.।।194।।

ॐ ह्रीं साधु-परद्रव्याकांक्षा-विमुखाय श्रीसिद्ध.।।195।।

ॐ ह्रीं अर्हदपुनर्भवकांक्षिताय श्रीसिद्ध.।।196।।

ॐ ह्रीं सिद्धापुनर्भवकांक्षिताय श्रीसिद्ध.।।197।।

ॐ ह्रीं सूर्यपुनर्भवकांक्षिताय श्रीसिद्ध.।।198।।

ॐ ह्रीं पाठकापुनर्भवकांक्षिताय श्रीसिद्ध.।।199।।

ॐ ह्रीं साध्वपुनर्भवकांक्षिताय श्रीसिद्ध.।।200।।

ॐ ह्रीं अर्हद्-विषयानुरागहंताय श्रीसिद्ध.।।201।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-विषयानुरागहंताय श्रीसिद्ध.।।202।।

ॐ ह्रीं सूरि-विषयानुरागहंताय श्रीसिद्ध.।।203।।

ॐ ह्रीं पाठक-विषयानुरागहंताय श्रीसिद्ध.।।204।।

ॐ ह्रीं साधु-विषयानुरागहंताय श्रीसिद्ध.।।205।।

ॐ ह्रीं अर्हद्-देहे सति-देहातीतानुभूताय श्रीसिद्ध.।।206।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-देहातीतानुभूताय श्रीसिद्ध.।।207।।

ॐ ह्रीं सूरि-देहे सति देहातीतानुभूताय श्रीसिद्ध.।।208।।

ॐ ह्रीं पाठक-देहे सति देहातीतानुभूताय श्रीसिद्ध.।।209।।

ॐ ह्रीं साधु-देहे सति देहातीतानुभूताय श्रीसिद्ध.।।210।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-स्वात्मगुणविद्वेषविनाशकाय श्रीसिद्ध.।।211।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वात्मगुणविद्वेषविनाशकाय श्रीसिद्ध.।।212।।

ॐ ह्रीं सूरि-स्वात्मगुणविद्वेषविनाशकाय श्रीसिद्ध.।।213।।

ॐ ह्रीं पाठक-स्वात्मगुणविद्वेषविनाशकाय श्रीसिद्ध.।।214।।

ॐ ह्रीं साधु-स्वात्मगुणविद्वेषविनाशकाय श्रीसिद्ध.।।215।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-शाश्वत-अमूढदृष्टियुक्ताय श्रीसिद्ध.।।216।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-शाश्वत-अमूढदृष्टियुक्ताय श्रीसिद्ध.।।217।

ॐ ह्रीं सूरि-शाश्वत-अमूढदृष्टियुक्ताय श्रीसिद्ध.।।218।।

ॐ ह्रीं पाठक-शाश्वत-अमूढदृष्टियुक्ताय श्रीसिद्ध.।।219।।

ॐ ह्रीं साधु-शाश्वत-अमूढदृष्टियुक्ताय श्रीसिद्ध.।।220।।

ॐ ह्रीं अर्हत्-परमनि:शंकित-भावधराय श्रीसिद्ध.।।221।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-परमनि:शंकित-भावधराय श्रीसिद्ध.।।222।।

ॐ ह्रीं सूरि-परमनि:शंकित-भावधराय श्रीसिद्ध.।।223।।

ॐ ह्रीं पाठक-परमनि:शंकित-भावधराय श्रीसिद्ध.।।224।।

ॐ ह्रीं साधु-परमनि:शंकित-भावधराय श्रीसिद्ध.।।225।।

ॐ ह्रीं अर्हदशुभलेश्याभाव-विनाशकाय श्रीसिद्ध.।।226।।

ॐ ह्रीं सिद्धाशुभलेश्याभाव-विनाशकाय श्रीसिद्ध.।।227।।

ॐ ह्रीं सूर्यशुभलेश्याभाव-विनाशकाय श्रीसिद्ध.।।228।।

ॐ ह्रीं पाठकाशुभलेश्याभाव-विनाशकाय श्रीसिद्ध.।।229।।

ॐ ह्रीं साध्वशुभलेश्याभाव-विनाशकाय श्रीसिद्ध.।।230।।

ॐ ह्रीं अर्हद्-वेदत्रयाभिलाषा-जिताय श्रीसिद्ध.।।231।।

ॐ ह्रीं सिद्ध–वेदत्रयाभिलाषा–जिताय श्रीसिद्ध.।।232।।

ॐ ह्रीं सूरि–वेदत्रयाभिलाषा–जिताय श्रीसिद्ध.।।233।।

ॐ ह्रीं पाठक–वेदत्रयाभिलाषा–जिताय श्रीसिद्ध.।।234।।

ॐ ह्रीं साधु–वेदत्रयाभिलाषा–जिताय श्रीसिद्ध.।।235।।

ॐ ह्रीं अर्हत्–दसमुण्डन–मुण्डकाय श्रीसिद्ध.।।236।।

ॐ ह्रीं सिद्ध–दसमुण्डन–मुण्डकाय श्रीसिद्ध.।।237।।

ॐ ह्रीं सूरि–दसमुण्डन–मुण्डकाय श्रीसिद्ध.।।238।।

ॐ ह्रीं पाठक–दसमुण्डन–मुण्डकाय श्रीसिद्ध.।।239।।

ॐ ह्रीं साधु–दसमुण्डन–मुण्डकाय श्रीसिद्ध.।।240।।

ॐ ह्रीं अर्हत्–सर्वसङ्गविवर्जिताय श्रीसिद्ध.।।241।।

ॐ ह्रीं सिद्ध–सर्वसङ्गविवर्जिताय श्रीसिद्ध.।।242।।

ॐ ह्रीं सूरि–सर्वसङ्गविवर्जिताय श्रीसिद्ध.।।243।।

ॐ ह्रीं पाठक–सर्वसङ्गविवर्जिताय श्रीसिद्ध.।।244।।

ॐ ह्रीं साधु–सर्वसङ्गविवर्जिताय श्रीसिद्ध.।।245।।

ॐ ह्रीं अर्हन्नवकोटिभि:सर्वमृषामोचकाय श्रीसिद्ध.।।246।।

ॐ ह्रीं सिद्ध–नवकोटिभि:सर्वमृषामोचकाय श्रीसिद्ध.।।247।।

ॐ ह्रीं सूरि–नवकोटिभि:सर्वमृषामोचकाय श्रीसिद्ध.।।248।।

ॐ ही पाठक–नवकोटिभि:सर्वमृषामोचकाय श्रीसिद्ध.।।249।।

ॐ ह्रीं साधु–नवकोटिभि:सर्वमृषामोचकाय श्रीसिद्ध.।।250।।

ॐ ह्रीं अर्हद्–भवकानने सर्वोत्कृष्ट–निर्देशकाय श्रीसिद्ध.।।251।।

ॐ ह्रीं सिद्ध–भवकानने सर्वोत्कृष्ट–निर्देशकाय श्रीसिद्ध.।।252।।

ॐ ह्रीं सूरि–भवकानने सर्वोत्कृष्ट–निर्देशकाय श्रीसिद्ध.।।253।।

ॐ ह्रीं पाठक-भवकानने सर्वोत्कृष्ट-निर्देशकाय श्रीसिद्ध.।।254।।

ॐ ह्रीं साधु-भवकानने सर्वोत्कृष्ट-निर्देशकाय श्रीसिद्ध.।।255।।

ॐ ह्रीं अर्हद्-भववारिधि-स्वपरोद्धारकाय श्रीसिद्ध.।।256।।

ॐ ह्रीं सिद्ध-भववारिधि-स्वपरोद्धारकाय श्रीसिद्ध.।।257।।

ॐ ह्रीं सूरि-भववारिधि-स्वपरोद्धारकाय श्रीसिद्ध.।।258।।

ॐ ह्रीं पाठक-भववारिधि-स्वपरोद्धारकाय श्रीसिद्ध.।।259।।

ॐ ह्रीं साधु-भववारिधि-स्वपरोद्धारकाय श्रीसिद्ध.।।260।।

(महार्घ्य)

(चौपाई छंद)

अर्हत् आदि पंचगुरु स्वामी, अंतर बसें जु अंतर्यामी।
पंचभ्रमण तज शिव सुख पाऊँ, तबलौं पन गुरु शीश झुकाऊँ।।

ॐ ह्रीं अनंतगुणयुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमो महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शान्तये शान्तिधारा....।।

दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जाप्य– ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।।

(अथ अष्टम-कोष्ठोपरि-दिव्य-मंगल-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अष्टम पूजन

स्थापना

(गीतिका छंद) (तर्ज-मैं देव श्री अरिहंत....)

सिद्ध भू लोकाग्र संस्थित, सर्व शिव निवसे जहाँ।
धरहि संयम भव्य योगी, कर्म हनि पहुँचे वहाँ॥
सिद्ध लोक रु भूमि सिद्धा, शिला सिद्धी हित जजें।
सदा आह्वानन करें हम, सिद्धिपति बनने भजें॥

(दोहा)

रजतमयी शुभ सिद्ध है, शाश्वत शिला पुनीत।
भव्य सिद्ध वंदन करें, करें इन्हीं से प्रीत॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थ-सिद्धशिलोपरि-विराजमानानन्तानन्त-सिद्ध समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थ-सिद्धशिलोपरि-विराजमानानन्तानन्त-सिद्ध समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थ-सिद्धशिलोपरि-विराजमानानन्तानन्त-सिद्ध समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणम्।

अर्घ्यावली 576 अर्घ्य मंत्रावली

ॐ ह्रीं सर्ववस्तु-अग्राहकाय श्रीसिद्धचक्राधिपतये नमः॥1॥

ॐ ह्रीं अपापपुण्याय श्रीसिद्ध.॥2॥

ॐ ह्रीं परमविवेकाय श्रीसिद्ध.॥3॥

ॐ ह्रीं स्वपरप्रबोधकाय श्रीसिद्ध.॥4॥

ॐ ह्रीं परमहिताय श्रीसिद्ध.॥5॥

ॐ ह्रीं गुणसंवर्द्धकाय श्रीसिद्ध.।।6।।

ॐ ह्रीं अजिताय श्रीसिद्ध.।।7।।

ॐ ह्रीं निष्कामाय श्रीसिद्ध.।।8।।

ॐ ह्रीं अचलाय श्रीसिद्ध.।।9।।

ॐ ह्रीं अनुपमाय श्रीसिद्ध.।।10।।

ॐ ह्रीं पापनिवारकाय श्रीसिद्ध.।।11।।

ॐ ह्रीं गुण-अभेदाय श्रीसिद्ध.।।12।।

ॐ ह्रीं विभावपर्यायवर्जिताय श्रीसिद्ध.।।13।।

ॐ ह्रीं स्वभावपर्याययुक्ताय श्रीसिद्ध.।।14।।

ॐ ह्रीं स्वात्म-स्वतंत्र-रमणाय श्रीसिद्ध.।।15।।

ॐ ह्रीं ज्ञानज्योतिषे श्रीसिद्ध.।।16।।

ॐ ह्रीं अक्षोभ्यभाववर्द्धकाय श्रीसिद्ध.।।17।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषविमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।18।।

ॐ ह्रीं भवकारणोज्झोतिताय श्रीसिद्ध.।।19।।

ॐ ह्रीं धर्ममूर्तये श्रीसिद्ध.।।20।।

ॐ ह्रीं जिनशासन-प्रभावकाय श्रीसिद्ध.।।21।।

ॐ ह्रीं उत्तम-गुणमण्डिताय श्रीसिद्ध.।।22।।

ॐ ह्रीं स्वात्म-निःसृत-निर्भरानंदाय श्रीसिद्ध.।।23।।

ॐ ह्रीं स्वपर-विबोधकारकाय श्रीसिद्ध.।।24।।

ॐ ह्रीं बुद्धाय श्रीसिद्ध.।।25।।

ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय श्रीसिद्ध.।।26।।

ॐ ह्रीं योगीश्वराय श्रीसिद्ध.।।27।।

ॐ ह्रीं यथालब्धस्वकीय-गुणतुष्टाय श्रीसिद्ध.।।28।।

ॐ ह्रीं स्वात्मोत्पन्नगुणयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।29।।

ॐ ह्रीं स्वभावपुष्टाय श्रीसिद्ध.।।30।।

ॐ ह्रीं स्वात्मवैभव-सम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।31।।

ॐ ह्रीं अमल-गुणधारकाय श्रीसिद्ध.।।32।।

ॐ ह्रीं अमलगुणकारकाय श्रीसिद्ध.।।33।।

ॐ ह्रीं परमनिर्मलाय श्रीसिद्ध.।।34।।

ॐ ह्रीं अनंतज्योतिषे श्रीसिद्ध.।।35।।

ॐ ह्रीं अभिन्नाय श्रीसिद्ध.।।36।।

ॐ ह्रीं भिन्नाभिन्नाय श्रीसिद्ध.।।37।।

ॐ ह्रीं अखेदाय श्रीसिद्ध.।।38।।

ॐ ह्रीं अवेदाय श्रीसिद्ध.।।39।।

ॐ ह्रीं अकायाय श्रीसिद्ध.।।40।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्राय श्रीसिद्ध.।।41।।

ॐ ह्रीं योगनिवृत्ताय श्रीसिद्ध.।।42।।

ॐ ह्रीं अयोगस्वरूपाय श्रीसिद्ध.।।43।।

ॐ ह्रीं कषायहेतुरहिताय श्रीसिद्ध.।।44।।

ॐ ह्रीं नश्वरज्ञानरहिताय श्रीसिद्ध.।।45।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषनिर्मूलाय श्रीसिद्ध.।।46।।

ॐ ह्रीं विपर्ययज्ञानरहिताय श्रीसिद्ध.।।47।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्रयरहिताय श्रीसिद्ध.।।48।।

ॐ ह्रीं त्रिविधकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।49।।

ॐ ह्रीं जीवविपाकिकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।50।।

ॐ ह्रीं पुद्‌गलविपाकिकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।51।।

ॐ ह्रीं क्षेत्रविपाकिकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।52।।

ॐ ह्रीं भवविपाकिकर्मरहिताय श्रीसिद्ध.।।53।।

ॐ ह्रीं परमविधिस्वरूपाय श्रीसिद्ध.।।54।।

ॐ ह्रीं शाश्वतशुद्धोपयोगाय श्रीसिद्ध.।।55।।

ॐ ह्रीं सादि-अनंताय श्रीसिद्ध.।।56।।

ॐ ह्रीं शुद्धपरिणमन-स्वरूपाय श्रीसिद्ध.।।57।।

ॐ ह्रीं उदितावसान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।58।।

ॐ ह्रीं अकलुषिताय श्रीसिद्ध.।।59।।

ॐ ह्रीं परमधवलाय श्रीसिद्ध.।।60।।

ॐ ह्रीं टंकोत्कीर्णाय श्रीसिद्ध.।।61।।

ॐ ह्रीं सहजशुद्धाय श्रीसिद्ध.।।62।।

ॐ ह्रीं अतिशयरूपाय श्रीसिद्ध.।।63।।

ॐ ह्रीं व्यक्ताव्यक्तरहिताय श्रीसिद्ध.।।64।।

ॐ ह्रीं शाश्वतरूपनिमग्नाय श्रीसिद्ध.।।65।।

ॐ ह्रीं शुद्धस्वरूपस्थिताय श्रीसिद्ध.।।66।।

ॐ ह्रीं श्रीमते श्रीसिद्ध.।।67।।

ॐ ह्रीं शाश्वतस्वत्वमण्डिताय श्रीसिद्ध.।।68।।

ॐ ह्रीं स्वचतुष्टयराजिताय श्रीसिद्ध.।।69।।

ॐ ह्रीं अहीनाय श्रीसिद्ध.।।70।।

ॐ ह्रीं अनधिकाय श्रीसिद्ध.।।71।।

ॐ ह्रीं समविषमरहिताय श्रीसिद्ध.।।72।।

ॐ ह्रीं गतोत्सर्ग-अनुत्सर्गाय श्रीसिद्ध.।।73।।

ॐ ह्रीं कल्पनातीताय श्रीसिद्ध.।।74।।

ॐ ह्रीं अकल्पनीयरूपाय श्रीसिद्ध.।।75।।

ॐ ह्रीं अच्छेदनाय श्रीसिद्ध.।।76।।

ॐ ह्रीं अकलंकाय श्रीसिद्ध.।।77।।

ॐ ह्रीं गतनिर्वाण-क्रिया श्रीसिद्ध.।।78।।

ॐ ह्रीं चिदेशाय श्रीसिद्ध.।।79।।

ॐ ह्रीं अमोघाय श्रीसिद्ध.।।80।।

ॐ ह्रीं अशब्दाय श्रीसिद्ध.।।81।।

ॐ ह्रीं शिवसूर्याय श्रीसिद्ध.।।82।।

ॐ ह्रीं गमनागमनाय श्रीसिद्ध.।।83।।

ॐ ह्रीं कालातीताय श्रीसिद्ध.।।84।।

ॐ ह्रीं मंगलाय श्रीसिद्ध.।।85।।

ॐ ह्रीं अनघाय श्रीसिद्ध.।।86।।

ॐ ह्रीं दमिने श्रीसिद्ध.।।87।।

ॐ ह्रीं जितक्लेशाय श्रीसिद्ध.।।88।।

ॐ ह्रीं लोकज्ञाय श्रीसिद्ध.।।89।।

ॐ ह्रीं लोकगुरवे श्रीसिद्ध.।।90।।

ॐ ह्रीं देवाधिदेवाय श्रीसिद्ध.।।91।।

ॐ ह्रीं अनंतश्रीजुषे श्रीसिद्ध.।।92।।

ॐ ह्रीं देवश्रेष्ठाय श्रीसिद्ध.।।93।।

ॐ ह्रीं परमाराध्याय श्रीसिद्ध.।।94।।

ॐ ह्रीं अवलोकलोकालोकाय श्रीसिद्ध.।।95।।

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय श्रीसिद्ध.।।96।।

ॐ ह्रीं सदाप्रकाशाय श्रीसिद्ध.।।97।।

ॐ ह्रीं महाज्येष्ठाय श्रीसिद्ध.।।98।।

ॐ ह्रीं श्रीपतये श्रीसिद्ध.।।99।।

ॐ ह्रीं परात्माय श्रीसिद्ध.।।100।।

ॐ ह्रीं परमाय श्रीसिद्ध.।।101।।

ॐ ह्रीं परमानन्दाय श्रीसिद्ध.।।102।।

ॐ ह्रीं अखिलार्थदर्शिने श्रीसिद्ध.।।103।।

ॐ ह्रीं नित्यानंदाय श्रीसिद्ध.।।104।।

ॐ ह्रीं शंकराय श्रीसिद्ध.।।105।।

ॐ ह्रीं शंभवाय श्रीसिद्ध.।।106।।

ॐ ह्रीं अनंतदानाय श्रीसिद्ध.।।107।।

ॐ ह्रीं अनंतलब्धये श्रीसिद्ध.।।108।।

ॐ ह्रीं तेजस्विने श्रीसिद्ध.।।109।।

ॐ ह्रीं परमेष्ठिने श्रीसिद्ध.।।110।।

ॐ ह्रीं परमर्षये श्रीसिद्ध.।।111।।

ॐ ह्रीं योगिनामधियोगिने श्रीसिद्ध.।।112।।

ॐ ह्रीं परमदृशे श्रीसिद्ध.।।113।।

ॐ ह्रीं गताशेषदोषाय श्रीसिद्ध.।।114।।

ॐ ह्रीं आत्मभुवे श्रीसिद्ध.।।115।।

ॐ ह्रीं अक्षराय श्रीसिद्ध.।।116।।

ॐ ह्रीं अनीश्वराय श्रीसिद्ध.।।117।।

ॐ ह्रीं जिष्णवे श्रीसिद्ध.।।118।।

ॐ ह्रीं भविबन्धवे श्रीसिद्ध.।।119।।

ॐ ह्रीं अबन्धनाय श्रीसिद्ध.।।120।।

ॐ ह्रीं अमेयाय श्रीसिद्ध.।।121।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्याय श्रीसिद्ध.।।122।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्माय श्रीसिद्ध.।।123।।

ॐ ह्रीं परतराय श्रीसिद्ध.।।124।।

ॐ ह्रीं ब्रह्माय श्रीसिद्ध.।।125।।

ॐ ह्रीं पूर्णनारीश्वराय श्रीसिद्ध.।।126।।

ॐ ह्रीं अव्ययाय श्रीसिद्ध.।।127।।

ॐ ह्रीं पूर्णब्रह्मेन्दवे श्रीसिद्ध.।।128।।

ॐ ह्रीं शुद्धेशाय श्रीसिद्ध.।।129।।

ॐ ह्रीं सिद्धेशाय श्रीसिद्ध.।।130।।

ॐ ह्रीं निष्कर्माय श्रीसिद्ध.।।131।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मेशाय श्रीसिद्ध.।।132।।

ॐ ह्रीं अजन्मेयाय श्रीसिद्ध.।।133।।

ॐ ह्रीं संवेद्याय श्रीसिद्ध.।।134।।

ॐ ह्रीं पञ्चेन्द्रियातीताय श्रीसिद्ध.।।135।।

ॐ ह्रीं भवारये श्रीसिद्ध.।।136।।

ॐ ह्रीं मुक्तिवामापतये श्रीसिद्ध.।।137।।

ॐ ह्रीं सिद्धीश्वराय श्रीसिद्ध.।।138।।

ॐ ह्रीं मुक्तात्मने श्रीसिद्ध.।।139।।

ॐ ह्रीं वियोगसंयोगमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।140।।

ॐ ह्रीं गुणाकराय श्रीसिद्ध.।।141।।

ॐ ह्रीं स्वयंभुवे श्रीसिद्ध.।।142।।

ॐ ह्रीं अनंतजिताय श्रीसिद्ध.।।143।।

ॐ ह्रीं विज्ञानधारकाय श्रीसिद्ध.।।144।।

ॐ ह्रीं विश्वदृष्टे श्रीसिद्ध.।।145।।

ॐ ह्रीं महाक्षान्तये श्रीसिद्ध.।।146।।

ॐ ह्रीं शमात्मने श्रीसिद्ध.।।147।।

ॐ ह्रीं रत्यारतिभावमुक्ताय श्रीसिद्ध.।।148।।

ॐ ह्रीं सर्वशक्तिमते श्रीसिद्ध.।।149।।

ॐ ह्रीं चरमतप्तायमते श्रीसिद्ध.।।150।।

ॐ ह्रीं अगम्याय श्रीसिद्ध.।।151।।

ॐ ह्रीं निरभ्रचैतन्यभानवे श्रीसिद्ध.।।152।।

ॐ ह्रीं विभावोत्पादवर्जिताय श्रीसिद्ध.।।153।।

ॐ ह्रीं सत्त्वेशाय श्रीसिद्ध.।।154।।

ॐ ह्रीं प्राणेन्द्राय श्रीसिद्ध.।।155।।

ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय श्रीसिद्ध.।।156।।

ॐ ह्रीं शुद्धोपयोगफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।157।।

ॐ ह्रीं प्रशान्ताय श्रीसिद्ध.।।158।।

ॐ ह्रीं महावीराय श्रीसिद्ध.।।159।।

ॐ ह्रीं सर्वजिनाय श्रीसिद्ध.।।160।।

ॐ ह्रीं परमोत्थानाय श्रीसिद्ध.।।161।।

ॐ ह्रीं विदेहिने श्रीसिद्ध.।।162।।

ॐ ह्रीं एकरूपाय श्रीसिद्ध.।।163।।

ॐ ह्रीं अनंतधर्मात्मकाय श्रीसिद्ध.।।164।।

ॐ ह्रीं भवकारणरहिताय श्रीसिद्ध.।।165।।

ॐ ह्रीं परमावगाहाय श्रीसिद्ध.।।166।।

ॐ ह्रीं चैतन्यवारिधये श्रीसिद्ध.।।167।।

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धिरहिताय श्रीसिद्ध.।।168।।

ॐ ह्रीं लौकिकोपलब्धिरहिताय श्रीसिद्ध.।।169।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यजयिने श्रीसिद्ध.।।170।।

ॐ ह्रीं नि:शेषगुणार्णवाय श्रीसिद्ध.।।171।।

ॐ ह्रीं लोकाग्रवासिने श्रीसिद्ध.।।172।।

ॐ ह्रीं त्रिभुवनपतये श्रीसिद्ध.।।173।।

ॐ ह्रीं लोकान्त-सुस्थिराय श्रीसिद्ध.।।174।।

ॐ ह्रीं अन्तातीताय श्रीसिद्ध.।।175।।

ॐ ह्रीं स्वात्मस्थिराय श्रीसिद्ध.।।176।।

ॐ ह्रीं विश्वोत्तमाय श्रीसिद्ध.।।177।।

ॐ ह्रीं शुद्धपर्याय श्रीसिद्ध.।।178।।

ॐ ह्रीं शुद्धध्रौव्याय श्रीसिद्ध.।।179।।

ॐ ह्रीं सिद्धक्षेत्रभूपतये श्रीसिद्ध.।।180।।

ॐ ह्रीं अजराय श्रीसिद्ध.।।181।।

ॐ ह्रीं अमराय श्रीसिद्ध.।।182।।

ॐ ह्रीं जन्ममृत्युविवर्जिताय श्रीसिद्ध.।।183।।

ॐ ह्रीं सकलरोगरहिताय श्रीसिद्ध.।।184।।

ॐ ह्रीं निकलरूपस्थिताय श्रीसिद्ध.।।185।।

ॐ ह्रीं दु:खविमोचिताय श्रीसिद्ध.।।186।।

ॐ ह्रीं विगतशोकाय श्रीसिद्ध.।।187।।

ॐ ह्रीं प्रमेयाय श्रीसिद्ध.।।188।।

ॐ ह्रीं कलविवर्जिताय श्रीसिद्ध.।।189।।

ॐ ह्रीं अहेतुकाय श्रीसिद्ध.।।190।।

ॐ ह्रीं अकृताय श्रीसिद्ध.।।191।।

ॐ ह्रीं सहजश्रेष्ठाय श्रीसिद्ध.।।192।।

ॐ ह्रीं परमभेदाय श्रीसिद्ध.।।193।।

ॐ ह्रीं भवसुशोषकाय श्रीसिद्ध.।।194।।

ॐ ह्रीं अचलाय श्रीसिद्ध.।।195।।

ॐ ह्रीं अकलाय श्रीसिद्ध.।।196।।

ॐ ह्रीं अनन्तिमाय श्रीसिद्ध.।।197।।

ॐ ह्रीं अमोहाय श्रीसिद्ध.।।198।।

ॐ ह्रीं अजेयाय श्रीसिद्ध.।।199।।

ॐ ह्रीं अनन्ताय श्रीसिद्ध.।।200।।

ॐ ह्रीं अमूर्ताय श्रीसिद्ध.।।201।।

ॐ ह्रीं अक्लेशाय श्रीसिद्ध.।।202।।

ॐ ह्रीं अलेश्याय श्रीसिद्ध.।।203।।

ॐ ह्रीं गतकषायाय श्रीसिद्ध.।।204।।

ॐ ह्रीं परमव्यापकाय श्रीसिद्ध.।।205।।

ॐ ह्रीं शाश्वताय श्रीसिद्ध.।।206।।

ॐ ह्रीं अलेपाय श्रीसिद्ध.।।207।।

ॐ ह्रीं अकर्माय श्रीसिद्ध.।।208।।

ॐ ह्रीं सिद्धाय श्रीसिद्ध.।।209।।

ॐ ह्रीं शुद्धाय श्रीसिद्ध.।।210।।

ॐ ह्रीं परमतत्त्वाय श्रीसिद्ध.।।211।।

ॐ ह्रीं गतोपद्रवाय श्रीसिद्ध.।।212।।

ॐ ह्रीं परमवीर्याय श्रीसिद्ध.।।213।।

ॐ ह्रीं अनंतगुणाय श्रीसिद्ध.।।214।।

ॐ ह्रीं निरुपमेशाय श्रीसिद्ध.।।215।।

ॐ ह्रीं गत्यागतिरहिताय श्रीसिद्ध.।।216।।

ॐ ह्रीं स्वभवशोषकाय श्रीसिद्ध.।।217।।

ॐ ह्रीं परमकंचनाय श्रीसिद्ध.।।218।।

ॐ ह्रीं विरागाय श्रीसिद्ध.।।219।।

ॐ ह्रीं अमृताय श्रीसिद्ध.।।220।।

ॐ ह्रीं निधनहीनाय श्रीसिद्ध.।।221।।

ॐ ह्रीं विगतद्वेषाय श्रीसिद्ध.।।222।।

ॐ ह्रीं शिवाय श्रीसिद्ध.।।223।।

ॐ ह्रीं प्रशस्तध्यानफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।224।।

ॐ ह्रीं दुर्ध्यानविमोचिताय श्रीसिद्ध.।।225।।

ॐ ह्रीं द्रव्यक्षेत्रकाल–भवभावपरावर्तन–रहिताय श्रीसिद्ध.।।226।।

ॐ ह्रीं अव्यक्तशासकाय श्रीसिद्ध.।।227।।

ॐ ह्रीं सुव्रताय श्रीसिद्ध.।।228।।

ॐ ह्रीं मुक्तिकंताय श्रीसिद्ध.।।229।।

ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय श्रीसिद्ध.।।230।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठाय श्रीसिद्ध.।।231।।

ॐ ह्रीं स्थविराय श्रीसिद्ध.।।232।।

ॐ ह्रीं वरिष्ठाय श्रीसिद्ध.।।233।।

ॐ ह्रीं अनिष्ठाय श्रीसिद्ध.।।234।।

ॐ ह्रीं स्थिराय श्रीसिद्ध.।।235।।

ॐ ह्रीं विश्वमुट् श्रीसिद्ध.।।236।।

ॐ ह्रीं विरताय श्रीसिद्ध.।।237।।

ॐ ह्रीं विविक्तात्मने श्रीसिद्ध.।।238।।

ॐ ह्रीं वीतमत्सराय श्रीसिद्ध.।।239।।

ॐ ह्रीं नि:संगाय श्रीसिद्ध.।।240।।

ॐ ह्रीं औपशमिक-सम्यक्त्व-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।241।।

ॐ ह्रीं औपशमिकचारित्र-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।242।।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानक्षायोपशमिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।243।।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञान-क्षायोपशमिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।244।।

ॐ ह्रीं अवधिज्ञान-क्षायोपशमिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।245।।

ॐ ह्रीं मन:पर्ययज्ञान-क्षायोपशमिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।246।।

ॐ ह्रीं कुमतिज्ञान-क्षायोपशमिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।247।।

ॐ ह्रीं कुश्रुतज्ञान-क्षायोपशमिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।248।।

ॐ ह्रीं कुअवधिज्ञान-क्षायोपशमिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।249।।

ॐ ह्रीं चक्षुदर्शन-क्षायोपशमिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।250।।

ॐ ह्रीं अचक्षुदर्शन-क्षायोपशमिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।251।।

ॐ ह्रीं अवधिदर्शन-क्षायोपशमिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।252।।

ॐ ह्रीं दानलब्धि–क्षायोपशमिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।253।।

ॐ ह्रीं लाभलब्धि–क्षायोपशमिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।254।।

ॐ ह्रीं भोगलब्धि–क्षायोपशमिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।255।।

ॐ ह्रीं उपभोगलब्धि–क्षायोपशमिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।256।।

ॐ ह्रीं वीर्यलब्धि–क्षायोपशमिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।257।।

ॐ ह्रीं क्षायोपशमिक–सम्यक्त्व–भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।258।।

ॐ ह्रीं क्षायोपशमिक–चारित्रभाव–रहिताय श्रीसिद्ध.।।259।।

ॐ ह्रीं संयमासंयम–क्षायोपशमिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।260।।

ॐ ह्रीं नरकगति–औदयिकभाव–रहिताय श्रीसिद्ध.।।261।।

ॐ ह्रीं तिर्यञ्चगति–औदयिक–भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।262।।

ॐ ह्रीं देवगति–औदयिक–भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।263।।

ॐ ह्रीं मनुष्यगति–औदयिक–भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।264।।

ॐ ह्रीं क्रोधकषाय–औदयिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।265।।

ॐ ह्रीं मानकषाय–औदयिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।266।।

ॐ ह्रीं मायाकषाय–औदयिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।267।।

ॐ ह्रीं लोभकषाय–औदयिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।268।।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेद–औदयिक–भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।269।।

ॐ ह्रीं स्त्रीवेद–औदयिक–भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।270।।

ॐ ह्रीं पुरुषवेद–औदयिक–भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।271।।

ॐ ह्रीं मिथ्यादर्शन–औदयिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।272।।

ॐ ह्रीं अज्ञान–औदयिक–भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।273।।

ॐ ह्रीं असंयम–औदयिक–भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।274।।

ॐ ह्रीं असिद्ध-औदयिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।275।।

ॐ ह्रीं कृष्णलेश्या-औदयिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।276।।

ॐ ह्रीं नीललेश्या-औदयिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।277।।

ॐ ह्रीं कापोतलेश्या-औदयिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।278।।

ॐ ह्रीं पीतलेश्या-औदयिकभावरहिताय श्रीसिद्ध.।।279।।

ॐ ह्रीं पद्मलेश्या-औदयिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।280।।

ॐ ह्रीं शुक्ललेश्या-औदयिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।281।।

ॐ ह्रीं भव्य-पारिणामिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।282।।

ॐ ह्रीं अभव्यपारिणामिक-भावरहिताय श्रीसिद्ध.।।283।।

ॐ ह्रीं जीवत्वपारिणामिक-भावसहिताय श्रीसिद्ध.।।284।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-सम्यक्त्व-भावयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।285।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-चारित्र-भावयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।286।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-ज्ञान-भावयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।287।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-दर्शन-भावयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।288।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-दान-भावयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।289।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-लाभ-भावयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।290।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-भोगभाव-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।291।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-उपभोगभाव-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।292।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-वीर्यभाव-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।293।।

ॐ ह्रीं मनोयोग-रहिताय श्रीसिद्ध.।।294।।

ॐ ह्रीं वचनयोग-रहिताय श्रीसिद्ध.।।295।।

ॐ ह्रीं काययोग-रहिताय श्रीसिद्ध.।।296।।

ॐ ह्रीं ज्ञानोपयोग-सहिताय श्रीसिद्ध.।।297।।

ॐ ह्रीं दर्शनोपयोग-सहिताय श्रीसिद्ध.।।298।।

ॐ ह्रीं असंयम-रहिताय श्रीसिद्ध.।।299।।

ॐ ह्रीं संयमासंयम-रहिताय श्रीसिद्ध.।।300।।

ॐ ह्रीं सामायिकसंयम-परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।301।।

ॐ ह्रीं छेदोपस्थापनासंयम-परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।302।।

ॐ ह्रीं परिहारविशुद्धिसंयम-परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।303।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मसाम्परायसंयम-परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।304।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातसंयम-परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।305।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व-रहिताय श्रीसिद्ध.।।306।।

ॐ ह्रीं सासादन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।307।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-मिथ्यात्व रहिताय श्रीसिद्ध.।।308।।

ॐ ह्रीं उपशम-सम्यक्त्व-रहिताय श्रीसिद्ध.।।309।।

ॐ ह्रीं क्षयोपशम-सम्यक्त्व-रहिताय श्रीसिद्ध.।।310।।

ॐ ह्रीं संज्ञित्व-रहिताय श्रीसिद्ध.।।311।।

ॐ ह्रीं असंज्ञित्व-रहिताय श्रीसिद्ध.।।312।।

ॐ ह्रीं सैनी-असैनी-रहिताय श्रीसिद्ध.।।313।।

ॐ ह्रीं आहारपर्याप्ति-रहिताय श्रीसिद्ध.।।314।।

ॐ ह्रीं शरीरपर्याप्ति-रहिताय श्रीसिद्ध.।।315।।

ॐ ह्रीं इंद्रियपर्याप्ति-रहिताय श्रीसिद्ध.।।316।।

ॐ ह्रीं श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति-रहिताय श्रीसिद्ध.।।317।।

ॐ ह्रीं भाषापर्याप्ति-रहिताय श्रीसिद्ध.।।318।।

ॐ ह्रीं मन:पर्याप्ति-रहिताय श्रीसिद्ध.।।319।।

ॐ ह्रीं गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।320।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।321।।

ॐ ह्रीं सासादन-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।322।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-मिथ्यात्व-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।323।।

ॐ ह्रीं अविरत-सम्यक्त्व-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।324।।

ॐ ह्रीं देशविरत-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।325।।

ॐ ह्रीं प्रमत्तविरत-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।326।।

ॐ ह्रीं अप्रमत्तविरत-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।327।।

ॐ ह्रीं अपूर्वकरण-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।328।।

ॐ ह्रीं अनिवृत्तिकरण-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।329।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मसाम्पराय-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।330।।

ॐ ह्रीं उपशान्त मोह-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।331।।

ॐ ह्रीं क्षीणमोह-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।332।।

ॐ ह्रीं सयोगकेवली-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।333।।

ॐ ह्रीं अयोगकेवली-गुणस्थानातीताय श्रीसिद्ध.।।334।।

ॐ ह्रीं इन्द्रिय-प्राण-रहिताय श्रीसिद्ध.।।335।।

ॐ ह्रीं बल-प्राण-रहिताय श्रीसिद्ध.।।336।।

ॐ ह्रीं आयु-प्राण-रहिताय श्रीसिद्ध.।।337।।

ॐ ह्रीं श्वासोच्छ्वास-प्राणरहिताय श्रीसिद्ध.।।338।।

ॐ ह्रीं नित्यनिगोदयोनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।339।।

ॐ ह्रीं इतरनिगोदयोनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।340।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक-योनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।341।।

ॐ ह्रीं जलकायिक-योनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।342।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिक-योनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।343।।

ॐ ह्रीं वायुकायिक-योनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।344।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिक-योनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।345।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय-योनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।346।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय-योनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।347।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय-योनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।348।।

ॐ ह्रीं नरक-योनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।349।।

ॐ ह्रीं देव-योनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।350।।

ॐ ह्रीं पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्चयोनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।351।।

ॐ ह्रीं मनुष्य-योनि-रहिताय श्रीसिद्ध.।।352।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिक-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।353।।

ॐ ह्रीं जलकायिक-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।354।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिक-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।355।।

ॐ ह्रीं वायुकायिक-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।356।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिक-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।357।।

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रिय-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।358।।

ॐ ह्रीं त्रीन्द्रिय-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।359।।

ॐ ह्रीं चतुरिन्द्रिय-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।360।।

ॐ ह्रीं जलचर-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।361।।

ॐ ह्रीं थलचर-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।362।।

ॐ ह्रीं नभचर-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।363।।

ॐ ह्रीं सरीसर्पादि-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।364।।

ॐ ह्रीं नारक-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।365।।

ॐ ह्रीं देव-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।366।।

ॐ ह्रीं मनुष्य-कुलरहिताय श्रीसिद्ध.।।367।।

ॐ ह्रीं सर्वभवप्रत्यय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।368।।

ॐ ह्रीं मिथ्यात्व-भवप्रत्यय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।369।।

ॐ ह्रीं अविरति-भवप्रत्यय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।370।।

ॐ ह्रीं प्रमाद-भवप्रत्यय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।371।।

ॐ ह्रीं कषाय-भवप्रत्यय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।372।।

ॐ ह्रीं योग-भवप्रत्यय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।373।।

ॐ ह्रीं विकथा-भवप्रत्यय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।374।।

ॐ ह्रीं प्रणयभाव-भवप्रत्यय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।375।।

ॐ ह्रीं इंद्रिय-भवप्रत्यय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।376।।

ॐ ह्रीं पंचनिद्रा-भवप्रत्यय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।377।।

ॐ ह्रीं प्रकृति-बंध-रहिताय श्रीसिद्ध.।।378।।

ॐ ह्रीं स्थिति-बंध-रहिताय श्रीसिद्ध.।।379।।

ॐ ह्रीं अनुभाग-बंध-रहिताय श्रीसिद्ध.।।380।।

ॐ ह्रीं प्रदेश-बंध-रहिताय श्रीसिद्ध.।।381।।

ॐ ह्रीं गुप्ति-परमफल-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।382।।

ॐ ह्रीं पञ्चसमिति-परमफल-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।383।।

ॐ ह्रीं धर्म-परमफल-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।384।।

ॐ ह्रीं अनुप्रेक्षा-परमफल-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।385।।

ॐ ह्रीं परीषहजय-परमफल-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।386।।

ॐ ह्रीं चारित्र-परमफल-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।387।।

ॐ ह्रीं द्रव्यभावसंवर-रहिताय श्रीसिद्ध.।।388।।

ॐ ह्रीं सकामनिर्जरा-रहिताय श्रीसिद्ध.।।389।।

ॐ ह्रीं अकामनिर्जरा-रहिताय श्रीसिद्ध.।।390।।

ॐ ह्रीं अविपाक-निर्जरा-रहिताय श्रीसिद्ध.।।391।।

ॐ ह्रीं द्रव्यभावनिर्जरा-रहिताय श्रीसिद्ध.।।392।।

ॐ ह्रीं मोक्षपरमपद-स्थिताय श्रीसिद्ध.।।393।।

ॐ ह्रीं बंधाबंध-बंध-व्युच्छिन्न-रहिताय श्रीसिद्ध.।।394।।

ॐ ह्रीं उदयानुदयोदय-व्युच्छिन्न-रहिताय श्रीसिद्ध.।।395।।

ॐ ह्रीं सत्त्वासत्त्व-सत्त्व-व्युच्छिन्न-रहिताय श्रीसिद्ध.।।396।।

ॐ ह्रीं सर्वार्त्त-ध्यान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।397।।

ॐ ह्रीं इष्टवियोगजार्त्त-ध्यान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।398।।

ॐ ह्रीं अनिष्टसंयोगजार्त्तध्यान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।399।।

ॐ ह्रीं पीड़ाचिन्तनार्त्तध्यान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।400।।

ॐ ह्रीं निदानबन्ध-आर्त्तध्यान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।401।।

ॐ ह्रीं सर्वरौद्रध्यान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।402।।

ॐ ह्रीं हिंसानन्दिरौद्रध्यान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।403।।

ॐ ह्रीं मृषानन्दिरौद्रध्यान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।404।।

ॐ ह्रीं चौर्यानन्दिरौद्रध्यान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।405।।

ॐ ह्रीं परिग्रहानन्दिरौद्रध्यान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।406।।

ॐ ह्रीं सर्वाप्रशस्तध्यान-रहिताय श्रीसिद्ध.।।407।।

ॐ ह्रीं आज्ञाविचयधर्मध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।408।।

ॐ ह्रीं अपायविचयधर्मध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।409।।

ॐ ह्रीं उपायविचयधर्मध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।410।।

ॐ ह्रीं विपाकविचयधर्मध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।411।।

ॐ ह्रीं जीवविचयधर्मध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।412।।

ॐ ह्रीं लोकविचयधर्मध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।413।।

ॐ ह्रीं विरागविचयधर्मध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।414।।

ॐ ह्रीं भवविचय-धर्मध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।415।।

ॐ ह्रीं अजीवविचयधर्मध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।416।।

ॐ ह्रीं हेतुविचयधर्मध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।417।।

ॐ ह्रीं सम्पूर्ण-धर्मध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।418।।

ॐ ह्रीं पृथक्त्ववितर्कवीचार-शुक्लध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।419।।

ॐ ह्रीं एकत्ववितर्कशुक्लध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।420।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति-शुक्लध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।421।।

ॐ ह्रीं व्युपरतक्रियानिवृत्ती-शुक्लध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।422।।

ॐ ह्रीं सम्पूर्ण-शुक्लध्यान-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।423।।

ॐ ह्रीं आहारसंज्ञा-नाशकाय श्रीसिद्ध.।।424।।

ॐ ह्रीं भयसंज्ञा-नाशकाय श्रीसिद्ध.।।425।।

ॐ ह्रीं मैथुनसंज्ञा-नाशकाय श्रीसिद्ध.।।426।।

ॐ ह्रीं परिग्रहसंज्ञा-नाशकाय श्रीसिद्ध.।।427।।

ॐ ह्रीं सर्वपुरुषार्थ-रहिताय श्रीसिद्ध.।।428।।

ॐ ह्रीं धर्मपुरुषार्थ-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।429।।

ॐ ह्रीं अर्थपुरुषार्थ-रहिताय श्रीसिद्ध.।।430।।

ॐ ह्रीं कामपुरुषार्थ-रहिताय श्रीसिद्ध.।।431।।

ॐ ह्रीं मोक्षपुरुषार्थ-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।432।।

ॐ ह्रीं सर्वनयाधीनाय श्रीसिद्ध.।।433।।

ॐ ह्रीं ज्ञानमद-रहिताय श्रीसिद्ध.।।434।।

ॐ ह्रीं ऐश्वर्यमद-रहिताय श्रीसिद्ध.।।435।।

ॐ ह्रीं कुलगर्व-रहिताय श्रीसिद्ध.।।436।।

ॐ ह्रीं जातिमद-रहिताय श्रीसिद्ध.।।437।।

ॐ ह्रीं बलमद-रहिताय श्रीसिद्ध.।।438।।

ॐ ह्रीं ऋद्धिमद-रहिताय श्रीसिद्ध.।।439।।

ॐ ह्रीं तपमद-रहिताय श्रीसिद्ध.।।440।।

ॐ ह्रीं शरीरमद-रहिताय श्रीसिद्ध.।।441।।

ॐ ह्रीं इहलोकभय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।442।।

ॐ ह्रीं परलोकभय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।443।।

ॐ ह्रीं मरणभय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।444।।

ॐ ह्रीं वेदनाभय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।445।।

ॐ ह्रीं अरक्षाभय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।446।।

ॐ ह्रीं अगुप्तिभय-रहिताय श्रीसिद्ध.।।447।।

ॐ ह्रीं अकस्माद्-भयरहिताय श्रीसिद्ध.।।448।।

ॐ ह्रीं सर्वमूढता-रहिताय श्रीसिद्ध.।।449।।

ॐ ह्रीं लोकमूढता-रहिताय श्रीसिद्ध.।।450।।

ॐ ह्रीं पाखंडमूढता-रहिताय श्रीसिद्ध.।।451।।

ॐ ह्रीं देवमूढता-रहिताय श्रीसिद्ध.।।452।।

ॐ ह्रीं सर्वानायतन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।453।।

ॐ ह्रीं द्रव्यपरावर्तन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।454।।

ॐ ह्रीं क्षेत्रपरावर्तन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।455।।

ॐ ह्रीं कालपरावर्तन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।456।।

ॐ ह्रीं भावपरावर्तन - रहिताय श्रीसिद्ध.।।457।।

ॐ ह्रीं भवपरावर्तन-रहिताय श्रीसिद्ध.।।458।।

ॐ ह्रीं सर्वातिक्रम-रहिताय श्रीसिद्ध.।।459।।

ॐ ह्रीं सर्वव्यतिक्रम-रहिताय श्रीसिद्ध.।।460।।

ॐ ह्रीं सर्वातिचार-रहिताय श्रीसिद्ध.।।461।।

ॐ ह्रीं सर्वानाचार-रहिताय श्रीसिद्ध.।।462।।

ॐ ह्रीं वर्धमानचारित्रधारक-हीयमानावस्था-रहिताय श्रीसिद्ध.।।463।।

ॐ ह्रीं निश्चयप्राण-युक्ताय श्रीसिद्ध.।।464।।

ॐ ह्रीं शंकादोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।465।।

ॐ ह्रीं कांक्षादोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।466।।

ॐ ह्रीं विचिकित्सादोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।467।।

ॐ ह्रीं मूढदृष्टिदोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।468।।

ॐ ह्रीं अनुपगूहनदोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।469।।

ॐ ह्रीं अस्थितिकरणदोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।470।।

ॐ ह्रीं अवात्सल्य-रहिताय श्रीसिद्ध.।।471।।

ॐ ह्रीं अप्रभावनादोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।472।।

ॐ ह्रीं अकालदोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।473।।

ॐ ह्रीं शब्द-दोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।474।।

ॐ ह्रीं अर्थदोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।475।।

ॐ ह्रीं शब्दार्थशुद्धिदोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।476।।

ॐ ह्रीं अविनयदोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।477।।

ॐ ह्रीं असम्मानदोष - रहिताय श्रीसिद्ध.।।478।।

ॐ ह्रीं अनुपधानदोष - रहिताय श्रीसिद्ध.।।479।।

ॐ ह्रीं निह्नवदोष-रहिताय श्रीसिद्ध.।।480।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।481।।

ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नता-भावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।482।।

ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचारभावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।483।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगभावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।484।।

ॐ ह्रीं संवेगभावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।485।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग-भावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।486।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप-भावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।487।।

ॐ ह्रीं साधुसमाधि-भावनाया: परमफल-संयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।488।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यभावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।489।।

ॐ ह्रीं अर्हद्‌भक्ति-भावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।490।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति-भावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।491।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति-भावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।492।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति-भावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।493।।

ॐ ह्रीं आवश्यकपारिहाणि-भावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।494।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना-भावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।495।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्व-भावनाया: परमफलसंयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।496।।

ॐ ह्रीं अनशन-बाह्यतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।497।।

ॐ ह्रीं अवमौदर्य-बाह्यतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।498।।

ॐ ह्रीं वृत्तिपरिसंख्यान-बाह्यतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।499।।

ॐ ह्रीं रसपरित्याग-बाह्यतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।500।।

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यासन-बाह्यतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।501।।

ॐ ह्रीं कायक्लेश-बाह्यतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।502।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चितान्तरङ्गतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।503।।

ॐ ह्रीं विनयान्तरङ्गतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।504।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्यान्तरङ्गतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।505।।

ॐ ह्रीं स्वाध्यायान्तरङ्गतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।506।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गान्तरङ्गतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।507।।

ॐ ह्रीं ध्यानान्तरङ्गतप-परमफलयुक्ताय श्रीसिद्ध.।।508।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षयाऽचाराङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।509।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया सूत्रकृताङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।510।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-स्थानाङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।511।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-समवायाङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।512।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-व्याख्याप्रज्ञप्त्यङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।513।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-ज्ञातृधर्मकथाङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।514।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षयोपासकाध्ययनाङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।515।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षयान्तःकृद्दशांङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।516।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षयानुत्तरोपपादिकदशाङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।517।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-प्रश्नव्याकरणाङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।518।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-विपाकसूत्राङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।519।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-दृष्टिवादाङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।520।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-द्वादशांङ्गोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।521।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षयोत्पादपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।522।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षयाग्रायणीपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।523।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया वीर्यानुप्रवादपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।524।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षयास्तिनास्तिप्रवाद-पूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।525।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-ज्ञानप्रवादपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।526।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-सत्यप्रवादपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।527।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षयाऽऽत्मप्रवादपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।528।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-कर्मप्रवादपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।529।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया - प्रत्याख्यानपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।530।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया - विद्यानुवादपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।531।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-कल्याणानुवादपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।532।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-प्राणानुवादपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।533।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-क्रियाविशालपूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।534।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-लोकबिन्दुसार-पूर्वोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।535।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-जीवद्रव्योपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।536।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-पुद्गलद्रव्योपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।537।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-धर्मद्रव्योपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।538।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-अधर्मद्रव्योपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।539।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षयाकाशद्रव्योपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।540।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-कालद्रव्योपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।541।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-जीवपदार्थोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।542।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-अजीवपदार्थोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।543।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-आस्रवपदार्थोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।544।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-बंधपदार्थोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।545।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-संवरपदार्थोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।546।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-निर्जरापदार्थोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।547।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-मोक्षपदार्थोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।548।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-पुण्यपदार्थोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।549।।

ॐ ह्रीं भूतनैगमनयापेक्षया-पापपदार्थोपदेशकाय श्रीसिद्ध.।।550।।

ॐ ह्रीं उत्तम-क्षमाधर्म-सम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।551।।

ॐ ह्रीं उत्तम-मार्दवधर्म-सम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।552।।

ॐ ह्रीं उत्तम-आर्जवधर्म-सम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।553।।

ॐ ह्रीं उत्तम-शौचधर्म-सम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।554।।

ॐ ह्रीं उत्तम-सत्यधर्म-सम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।555।।

ॐ ह्रीं उत्तम-संयमधर्म-सम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।556।।

ॐ ह्रीं उत्तम-तपधर्म-सम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।557।।

ॐ ह्रीं उत्तम-त्यागधर्म-सम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।558।।

ॐ ह्रीं उत्तम-अकिंचनधर्म-सम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।559।।

ॐ ह्रीं उत्तम-ब्रह्मचर्यधर्म-सम्पन्नाय श्रीसिद्ध.।।560।।

ॐ ह्रीं पूर्णसम्यक्त्वगुण-सहिताय श्रीसिद्ध.।।561।।

ॐ ह्रीं क्षायिक-ज्ञानगुण-सहिताय श्रीसिद्ध.।।562।।

ॐ ह्रीं क्षायिकदर्शनगुण-सहिताय श्रीसिद्ध.।।563।।

ॐ ह्रीं क्षायिकवीर्यगुण-सहिताय श्रीसिद्ध.।।564।।

ॐ ह्रीं अव्याबाधगुण - सहिताय श्रीसिद्ध.।।565।।

ॐ ह्रीं अवगाहनत्वगुण-सहिताय श्रीसिद्ध.।।566।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुण - सहिताय श्रीसिद्ध.।।567।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वगुण-सहिताय श्रीसिद्ध.।।568।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धि-पञ्चभरतक्षेत्रेभ्यो मोक्षगत-श्रीसिद्ध.।।569।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धि-पञ्चैरावतक्षेत्रेभ्यो मोक्षगत-श्रीसिद्ध.।।570।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धि-पञ्चविदेहक्षेत्रेभ्यो मोक्षगत-श्रीसिद्ध.।।571।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धि-दशोत्तमभोगभूमिभ्यो मोक्षगत-श्रीसिद्ध.।।572।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धि-दशमध्यमभोगभूमिभ्यो मोक्षगत-श्रीसिद्ध.।।573।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीपसम्बन्धि-जघन्यभोगभूमिभ्यो मोक्षगत-श्रीसिद्ध.।।574।।

ॐ ह्रीं लवणसागरादि-जलस्थानेभ्यो मोक्षगत-श्रीसिद्ध.।।575।।

ॐ ह्रीं मेर्वादिकृत्रिमाकृत्रिमपर्वतेभ्यो मोक्षगत-श्रीसिद्ध.।।576।।

पूर्णार्घ्य

(श्रीनंदि छंद) (मीठो-मीठो बोल....)

नित्य निरंजन अचल अनघ सुखधाम,

शिव निष्कर्म नमन हो आतम राम।

चरिम देह से न्यून सु आत्मप्रदेश,

शिव पूजूँ अब चलूँ निजातम देश॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थ-सिद्धशिलोपरि-विराजमानानन्तानन्त-सिद्धेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शान्तये शान्तिधारा..।। दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

जाप्य-ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः।।

वृहद जयमाला

(नरेन्द्र छंद) (तर्ज–पीछी से पीछी..../रोम रोम....)

मिथ्यात्रय के वशीभूत हो, जीव लोक में भटका,
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित को, धार कर्म को झटका।
शुभ शुभतर शुभतम व क्रमशः, शुद्ध भाव भवि करके,
नित्य निरंजन पंचम गति को, प्राप्त किया विधि हरके।।1।।
परद्रव्यन परिणमन न होता, ना अन्यत्व स्वरूपी,
बंध चलाचल रहित सिद्ध हैं, परम शान्त व अरूपी।
पर का कुछ संस्पर्श नहीं है, हैं अखण्ड अविकारी,
सिद्धशिला के अधिनायक शिव पद में धोक हमारी।।2।।
पर द्रव्यों भावों का आतम- शुद्ध नहीं है कर्त्ता,
निजभावों का कर्ता भोक्ता सिद्ध आत्मगुण वरता।
अप्रमत्त ना हैं प्रमत्त है सिद्ध भाव शुभ ज्ञायक,
त्रिविध कर्म के हारक होते, सिद्धशिला अधिनायक।।3।।
द्रव्य भाव नो कर्म विमुक्ता, सिद्ध आत्म गुण भोगी,
तुमको ध्या तुम सा बन जाता, होवे नित्य निरोगी।
स्वसंवेद्य अव्यय अक्षय, पर संयोग विहीना,
सर्वज्ञ अरु सर्वदर्शि शिव, पाप पुण्य से हीना।।4।।
लोकत्रय जानें देखें जिन, नय व्यवहार बताए,
निश्चय से निज आतम जानें, देखें आतम ध्याएँ।
ज्ञान ज्ञेय ज्ञाता विकल्प से, रहित चिन्मयी आतम,
सिद्ध रूप से निज स्वरूप को, जान बनूँ परमातम।।5।।

'सिद्ध' 'सिद्ध' जो नाम रटें तो, कार्य सिद्ध हो जाते,
लौकिक की क्या बात कहें, परमार्थ मुक्ति को पाते।
चंदन से लिपटे अहि बंधन, मोर ध्वनी सुन ढीले,
त्यों विधि बंधन होते उसके, शिव गुण गाय सुरीले॥6॥
सिद्धों की महिमा अगम्य पर, योगीगम्य कहाते,
सोऽहं-सोऽहं जपकर ज्ञानी, शाश्वत निज पद पाते।
तुम हो मैं, मैं तुम अनुभूती, नंतानंद दिलाती,
सिद्ध अर्चना कर भेजी, मैंने सिद्धों को पाती॥7॥
अभिनव सिद्ध चक्र जो रचता, अतिशय पुण्य कमाए,
इक भव में क्या वही भव्य फिर, भवों भवों सुख पाए।
निश्चित धर्म ध्वजा की छाया, पाकर भ्रमण नशाए,
सिद्धालय में सिद्ध संग फिर, बैठ आत्म सुख पाए॥8॥
सिद्धचक्र अर्चन कर मैना ने पति कुष्ट मिटाया,
है प्रसिद्ध ग्रंथों में जिसने, जो मांगा वो पाया।
सिद्धों सा बनने हम भी अब, सिद्ध शरण में आए,
वसु वसुधा पाने वसुनंदी, सिद्धों के गुण गाए॥9॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यशिखरस्थित-सिद्धशिलोपरि-विराजमानानन्तानन्त-सिद्धेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

(चउबोला छंद)

भाव सहित सिद्धों का अर्चन, भव भव दुःखविनाशक है।
सिद्धदेशवासी की भक्ती, चिद्गुण पूर्ण विकासक है॥
अति निर्मल निज भाव बनाकर, सिद्धार्चन करने आया।
तीव्र पुण्य का उदय सु पाकर, पाई जिनशासन छाया॥

।। इत्याशीर्वादः ।।

सिद्धचक्र आरती

–मुनि प्रज्ञानंद

सिद्धों का दरबार है, सर्व सौख्य आधार है।
जगमग रत्न दीप जलाकर, आरती बारम्बार है।।टेक।।

द्रव्य भाव नोकर्म रहित जिन, सिद्धालय के वासी हो।
सिद्धचक्र की करो अर्चना, गर शिव-सुख अभिलाषी हो।।
कर देती उद्धार है, भक्ति मुक्ति दातार है।
जगमग रत्न...।।1।।

अचल अकम्प अमल अविनाशी, अजर अमर अधिकारी हो।
पाप कर्म के नाशक भगवन्, भव शिव सुख दातारी हो।।
कर्मों की यहाँ हार है, तुमसे जोड़ा तार है।
जगमग रत्न...।।2।।

फरस गंध रस वर्ण विवर्जित, शाश्वत चिन्मय मूरत हो।
आप अतीन्द्रिय गुण सम्पादक, स्वसंवेदन तीरथ हो।।
भक्तों की दरकार है, तव स्वरूप ही सार है।
जगमग रत्न...।।3।।

सिद्ध रूप ही मम स्वरूप है, उसको निश्चित पाऊँगा।
सिद्धों का शुभ ध्यान लगाकर, सिद्ध रूप हो जाऊँगा।।
किये अनंतों पार हैं, आज हमारी बार है।
जगमग रत्न...।।4।।

चरम देह से न्यून जिनेश्वर, नंत गुणामृत के धारी।
भावी सिद्ध करें आराधन, क्रम अनादि से ये जारी।।
पाना शिव का द्वार है, फिर ना ये संसार है।
जगमग रत्न...।।5।।

''वसुनंदी सूरी'' कृत अभिनव, सिद्धार्चन जो करते हैं।
मुक्ति कंत बन नंत सिद्ध संग, शाश्वत वैभव वरते हैं।
लक्ष्य यही इस बार है, अब ना इन्तजार है।
जगमग रत्न...।।6।।

भजन

श्री सिद्धचक्र का पाठ करौ दिन आठ,
ठाठ से प्रानी, फल पायो मैना रानी।।टेक।।

मैना सुन्दरि इक नारी थी, कोढ़ी पति लखि दुखियारी थी,
नहिं पड़े चैन दिन रैन व्यथित अकुलानी।। फल पायो...

जो पति का कष्ट मिटाऊँगी, तो उभय लोक सुख पाऊँगी,
नहिं अजागलस्तनवत निष्फल जिंदगानी।। फल पायो...

इक दिवस गई जिन मन्दिर में, दर्शन करि अति हर्षी उर में,
फिर लखे साधु निर्ग्रन्थ दिगम्बर ज्ञानी।। फल पायो...

बैठी मुनि को करि नमस्कार, निज निन्दा करती बार बार,
भरि अश्रु नयन कही मुनि सों दुखद कहानी।। फल पायो...
बोले मुनि पुत्री धैर्य धरो, श्री सिद्धचक्र का पाठ करो,
नहिं रहे कुष्ठ की तन में नाम निशानी।। फल पायो...

सुनि साधु वचन हर्षी मैना, नहिं होंय झूठ मुनि के बैना,
करि के श्रद्धा श्री सिद्धचक्र की ठानी।। फल पायो...

जब पर्व अठाई आया है, उत्सवयुत पाठ कराया है,
सबके तन छिड़का यंत्र न्हवन का पानी।। फल पायो...

गंधोदक छिड़कत वसु दिन में, नहिं रहा कुष्ठ किंचित् तन में,
भई सात शतक की काया स्वर्ण समानी।। फल पायो...

भव भोग भोगि योगेश भये, श्रीपाल कर्म हनि मोक्ष गये,
दूजे भव मैना पावे शिव रजधानी।। फल पायो...

जो पाठ करैं मन वच तन से, वे छूटि जांय भव बंधन से,
मक्खन मत करौ विकल्प कहा जिनवानी।। फल पायो...

परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री 108

वसुनंदी जी मुनिराज द्वारा

रचित व संपादित साहित्य

मौलिक कृतियाँ

(प्राकृत साहित्य)			
क्र.सं.	नाम	क्र.सं.	नाम
1.	प्राकृत वाणी भाग-1	2.	प्राकृत वाणी भाग-2
3.	प्राकृत वाणी भाग-3	4.	प्राकृत वाणी भाग-4
5.	अहिंसगाहारो (अहिंसक आहार)	6.	अज्ज-सक्किदी (आर्य संस्कृति)
7.	अणुवेक्खा-सारो (अनुप्रेक्षा सार)	8.	जिणवर-थोत्तं (जिनवर स्तोत्र)
9.	जदि-किदि-कम्मं(यति कृतिकर्म)	10.	णंदिणंद-सुत्तं (नंदीनंद सूत्र)
11.	णिग्गंथ-थुदी (निर्ग्रन्थ स्तुति)	12.	तच्चसारो (तत्त्व सार)
13.	धम्म सुत्तं (धर्म सूत्र)	14.	अप्प-विहवो (आत्म वैभव)
15.	सुद्धप्पा (शुद्धात्मा)	16.	अप्पणिब्भर-भारदं (आत्मनिर्भर भारत)
17.	विज्जा-वसु-सावयायारो (विद्यावसु श्रावकाचार)	18.	रट्ठ-संति-महाजण्णो (राष्ट्र शांति महायज्ञ)
19.	अट्ठंग जोगो (अष्टांग योग)	20.	णमोयार महप्पुरो (णमोकार माहात्म्य)
21.	मूल-वण्णो (मूल वर्ण)	22.	मंगल-सुत्तं (मंगल सूत्र)
23.	विस्स-धम्मो (विश्व धर्म)	24.	विस्स-पुज्जो-दियंबरो (विश्व पूज्य दिगम्बर)
25.	समवसरण सोहा (समवसरण शोभा)	26.	वयण-पमाणत्तं (वचन प्रमाणत्व)
27.	अप्पसत्ती (आत्म शक्ति)	28.	कला-विण्णाणं (कला विज्ञान)
29.	को विवेगी (विवेकी कौन)	30.	पुण्णासव-णिलयो (पुण्यास्रव निलय)
31.	तित्थयर-णामत्थुदी (तीर्थंकर नाम स्तुति)	32.	रयणकंडो (सूक्ति कोश)
33.	धम्मस्स सुत्ति संगहो	34.	कम्म-सहावो (कर्म स्वभाव)
35.	खवगराय सिरोमणी (क्षपकराज शिरोमणि)	36.	सिरि सीयलणाह-चरियं (श्री शीतलनाथ चरित्र)
37.	अज्झप्प-सुत्ताणि (अध्यात्म सूत्र)	38.	समणायारो (श्रमणाचार)
39.	असोग-रोहिणी-चरियं (अशोक रोहिणी चरित्र) (महाकाव्य)	40.	लोगुत्तरविट्टी (लोकोत्तर वृत्ति)
41.	समणभावो (श्रमण भाव)	42.	झाणसारो (ध्यानसार)
43.	इड्ढिसारो (ऋद्धिसार)	44.	जिणवयणसारो (जिनवचनसार)
45.	भत्तिगुच्छो (भक्ति गुच्छ)	46.	पसमभावो (प्रशम भाव)
47.	सम्मेदसिहर महप्पुरो (सम्मेदशिखर महात्म्य)	48.	अम्हाण आयवत्तो (हमारा आर्यावर्त्त)
49.	विणयसारो (विनय सार)	50.	तव-सारो (तप सार)
51.	भाव-सारो (भाव सार)	52.	दाण-सारो (दान सार)
53.	लेस्सा-सारो (लेश्या सार)	54.	वेरग्ग-सारो (वैराग्य सार)
55.	णाण-सारो (ज्ञान सार)	56.	णीदि-सारो (नीति सार)

टीका ग्रंथ			
1.	प्रमेया टीका-रत्नमाला (संस्कृत)	2.	वसुधा टीका-द्रव्यसंग्रह (संस्कृत)
3.	नय प्रबोधिनी-आलाप पद्धति (हिंदी)	4.	श्रीनंदा टीका-सिद्धिप्रिय स्तोत्र (संस्कृत)

इंग्लिश साहित्य			
1.	Inspirational Tales Part& 1&2	2.	Meethe Pravachan Part-I

वाचना साहित्य			
1.	मुक्ति का वाग्दान (इष्टोपदेश)	2.	बोधि वृक्ष (प्रश्नोत्तर रत्नमालिका)
3.	शिवपथ का रथ (सामायिक पाठ)	4.	स्वात्मोपलब्धि (समाधि तंत्र)
5.	श्रावकधर्म-संहिता (रत्नकरण्ड श्रावकाचार)		

प्रवचन साहित्य			
1.	आईना मेरे देश का	2.	उत्तम क्षमा धर्म (आत्मा का ए.सी. रूम)
3.	उत्तम मार्दव धर्म (मान महाविष रूप)	4.	उत्तम आर्जव धर्म (रंचक दगा बहुत दुःखदानी)
5.	उत्तम शौच धर्म (लोभ पाप का बाप बखाना)	6.	उत्तम सत्य धर्म (सतवादी जग में सुखी)
7.	उत्तम संयम धर्म (जिस बिना नहिं जिनराज सीझे)	8.	उत्तम तप धर्म (तप चाहे सुरराय)
9.	उत्तम त्याग धर्म (निज हाथ दीजे साथ लीजे)	10.	उत्तम आकिंचन धर्म (परिग्रह चिंता दुःख ही मानो)
11.	उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म (चेतना का भोग)	12.	खुशी के आँसू
13.	खोज क्यों रोज-रोज	14.	गुरुत्तं भाग 1
15.	गुरुत्तं भाग 2	16.	गुरुत्तं भाग 3
17.	गुरुत्तं भाग 4	18.	गुरुत्तं भाग 5
19.	गुरुत्तं भाग 6	20.	गुरुत्तं भाग 7
21.	गुरुत्तं भाग 8	22.	गुरुत्तं भाग 9
23.	गुरुत्तं भाग 10	24.	गुरुत्तं भाग 11
25.	गुरुत्तं भाग 12	26.	गुरुत्तं भाग 13
27.	गुरुत्तं भाग 14	28.	गुरुत्तं भाग 15
29.	गुरुत्तं भाग 16	30.	गुरुत्तं भाग 17
31.	गुरुत्तं भाग 18	32.	चूको मत
33.	जय बजरंगबली	34.	जीवन का सहारा
35.	ठहरो! ऐसे चलो	36.	तैयारी जीत की
37.	दशामृत	38.	धर्म की महिमा
39.	ना मिटना बुरा है न पिटना	40.	नारी का धवल पक्ष
41.	शायद यही सच है	42.	श्रुत निर्झरी
43.	सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की शौर्य गाथा	44.	सीप का मोती (महावीर जयंती)
45.	स्वाती की बूँद		

हिंदी गद्य रचना

1.	अन्तर्यात्रा	2.	अच्छी बातें
3.	आज का निर्णय	4.	आ जाओ प्रकृति की गोद में
5.	आधुनिक समस्यायें प्रमाणिक समाधान	6.	आहारदान
7.	एक हजार आठ	8.	कलम पट्टी बुद्धिका
9.	गागर में सागर	10.	गुरु कृपा
11.	गुरुवर तेरा साथ	12.	जिन सिद्धांत महोदधि
13.	डॉक्टरों से मुक्ति	14.	दान के अचिन्त्य प्रभाव
15.	धर्म बोध संस्कार (भाग 1-4)	16.	धर्म संस्कार (भाग 1-2)
17.	निज अवलोकन	18.	वसु विचार
19.	वसुनन्दी उवाच	20.	मीठे प्रवचन (भाग 1)
21.	मीठे प्रवचन (भाग 2)	22.	मीठे प्रवचन (भाग 3)
23.	मीठे प्रवचन (भाग 4)	24.	मीठे प्रवचन (भाग 5)
25.	मीठे प्रवचन (भाग 6)	26.	रोहिणी व्रत कथा
27.	स्वप्न विचार	28.	सद्गुरु की सीख
29.	सफलता के सूत्र	30.	सर्वोदयी नैतिक धर्म
31.	संस्कारादित्य	32.	हमारे आदर्श

हिंदी काव्य रचना

1.	अक्षरातीत	2.	कल्याणी
3.	चैन की जिंदगी	4.	ना मैं चुप हूँ ना गाता हूँ
5.	मुक्ति दूत के मुक्तक	6.	हाइकू
7.	हीरों का खजाना	8.	सुसंस्कार वाटिका

विधान रचना

1.	कल्याण मंदिर विधान	2.	कलिकुण्ड पार्श्वनाथ विधान
3.	चौसठऋद्धि विधान	4.	णमोकार महार्चना
5.	दु:खों से मुक्ति (बृहद् सहस्रनाम महार्चना)	6.	यागमंडल विधान
7.	श्री समवशरण महार्चना	8.	श्री नंदीश्वर विधान
9.	श्री सम्मेदशिखर विधान	10.	श्री अजितनाथ विधान
11.	श्री संभवनाथ विधान	12.	श्री पद्मप्रभ विधान
13.	श्री चंद्रप्रभ विधान (देहरा तिजारा)	14.	श्री चंद्रप्रभ विधान
15.	श्री पुष्पदंत विधान	16.	श्री शांतिनाथ विधान
17.	श्री मुनिसुव्रतनाथ विधान	18.	श्री नेमिनाथ विधान
19.	श्री महावीर विधान	20.	श्री जम्बूस्वामी विधान

21.	श्री भक्तामर विधान	22.	श्री सर्वतोभद्र महार्चना
23.	श्री पंचमेरू विधान	24.	लघु नंदीश्वर विधान
25.	श्री चौबीसी महार्चना	26.	अभिनव सिद्धचक्र महार्चना
27.	अभिनव सिद्धचक्र मंत्रार्चना		

संपादित कृतियाँ (संस्कृत प्राकृत साहित्य)

1.	आराधना सार (श्रीमद्देवसेनाचार्य जी)	2.	आराधना समुच्चय (श्री रविचन्द्राचार्य)
3.	आध्यात्म तरंगिणी (आचार्य सोमदेव सूरी जी)	4.	कर्म विपाक (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5.	कर्मप्रकृति (सिद्धांतचक्रवर्ती आ. श्री अभयचंद्र जी)	6.	गुणरत्नाकर (रत्नकरण्ड श्रावकाचार) (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
7.	चार श्रावकाचार संग्रह	8.	जिनकल्पि सूत्र (श्री प्रभाचंद्राचार्य जी)
9.	जिन श्रमण भारती (संकलन-भक्ति, स्तुति, ग्रंथादि)	10.	जिन सहस्रनाम स्तोत्र
11.	तत्त्वार्थ सार (श्री मदमृताचन्द्राचार्य सूरि)	12.	तत्त्वार्थस्य संसिद्धि
13.	तत्त्वार्थ सूत्र (आ. श्री उमास्वामी जी)	14.	तत्वज्ञान तरंगिणी (श्री मद्भट्टारक ज्ञानभूषण जी)
15.	तच्च वियारो सारो (आ. श्री वसुनंदी जी)	16.	तत्व भावना (आ. श्री अमितगति जी)
17.	धर्म रत्नाकर (श्री जयसेनाचार्य जी)	18.	धम्म रसायण (आ. श्री पद्मनंदी स्वामी जी)
19.	ध्यान सूत्राणि (श्री माघनंदी सूरी)	20.	नीतिसारसमुच्चय (आ. श्री इंद्रनंदीस्वामी जी)
21.	पंच विंशतिका (आ. श्री पद्मनंदी जी)	22.	प्रकृति समुत्कीर्तन (सिद्धांत चक्रवर्ती श्री नेमीचंद्राचार्य जी)
23.	पंचरत्न	24.	पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (आ. श्री अमृतचंद्रस्वामी जी)
25.	मरणकण्डिका (आ. श्री अमितगति जी)	26.	भगवती आराधना (आ. श्री शिवकोटी स्वामी जी)
27.	भावत्रयफलप्रदर्शी (आ. श्री कुंथुसागर जी)	28.	मूलाचार प्रदीप (आ. श्री सकलकीर्तिस्वामी जी)
29.	योगामृत (भाग 1-2) (मुनि श्रीबाल चंद्र जी)	30.	योगसार (भाग 1, 2) (मुनि श्री बालचंद्र जी)
31.	रयणसार (आ. श्री कुंदकुंद स्वामी)	32.	वसुऋद्धि
*	रत्नमाला (आ. श्री शिवकोटि स्वामी जी)	*	स्वरूप संबोधन (आ. श्री अकलंक देव जी)
*	पूज्यपाद श्रावकाचार (आ. श्री पूज्यपाद जी)	*	इष्टोपदेश (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)
*	लघु द्रव्य संग्रह (आ. श्री नेमीचंद्र स्वामी जी)	*	वैराग्यमणिमाला (आ. श्री विशालकीर्ति जी)
*	अर्हत् प्रवचनम् (आ. श्री प्रभाचंद्र स्वामी जी)	*	ज्ञानांकुश (आ. श्री योगीन्द्र देव)
33.	सुभाषित रत्न संदोह (आ. श्री अमितगतिस्वामी जी)	34.	सिन्दूर प्रकरण (आ. श्री सोमदेव स्वामी जी)
35.	समाधि तंत्र (आ. श्री पूज्यपाद स्वामी जी)	36.	समाधि सार (आ. श्री समंतभद्र स्वामी जी)
37.	सार समुच्चय (आ. श्री कुलभद्र स्वामी जी)	38.	विषापहार स्तोत्र (महाकवि धनंजय)

प्रथमानुयोग साहित्य

1.	अमरसेन चरित्र (कविवर माणिक्कराज जी)	2.	आराधना कथा कोश (ब्र. श्री नेमीदत्त जी) (भाग 1-2-3)

3.	करकण्डु चरित्र (मुनि श्री कनकामर जी)	4.	कोटिभट श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
5.	गौतम स्वामी चारित्र (मण्डलाचार्य श्री धर्मचंद्र जी)	6.	चारूदत्त चरित्र (ब्र. श्री नेमीदत्त जी)
7.	चित्रसेन पद्मावती चरित्र (पं. पूर्णमल्ल जी)	8.	चेलना चरित्र
9.	चंद्रप्रभ चरित्र	10.	चौबीसी पुराण
11.	जिनदत्त चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)	12.	त्रिवेणी (संग्रह ग्रंथ)
13.	देशभूषण कुलभूषण चरित्र	14.	धर्मामृत (भाग 1-2) (श्री नयसेनाचार्य जी)
15.	धन्यकुमार चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)	16.	नागकुमार चरित्र (आ. श्री मल्लिषेण जी)
17.	नंगानंग कुमार चरित्र (श्रीमान् देवदत्त)	18.	प्रभंजन चरित्र (कविवर ब्रह्मराय)
19.	पाण्डव पुराण (श्री मदाचार्य शुभचंद्र देव)	20.	पार्श्वनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
21.	पुण्याश्रव कथा कोष (भाग 1-2) (श्री रामचंद्र मुमुक्षु)	22.	पुराण सार संग्रह (भाग 1-2) (आ. श्री दामनंदी जी)
23.	भरतेश वैभव (कवि रत्नाकर)	24.	भद्रबाहु चरित्र
25.	मल्लिनाथ पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)	26.	महीपाल चरित्र (कविवर श्री चारित्र भूषण)
27.	महापुराण (भाग 1-2)	28.	महावीर पुराण (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
29.	मौनव्रत कथा (आ. श्री श्रीचंद्र स्वामी जी)	30.	यशोधर चरित्र
31.	रामचरित्र (भाग 1-2) (आ. श्री सोमदेव स्वामी)	32.	रोहिणी व्रत कथा
33.	व्रत कथा संग्रह	34.	वरांग चरित्र (आ. श्री जटासिंह नंदी)
35.	विमलनाथ पुराण (श्री ब्रह्मचारीश्वर कृष्णदास जी)	36.	वीर वर्धमान चरित्र
37.	श्रेणिक चरित्र	38.	श्रीपाल चरित्र (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
39.	श्री जम्बूस्वामी चरित्र (श्री वीर कवि)	40.	शांतिनाथ पुराण (भाग 1-2) (कवि असग जी)
41.	सप्तव्यसन चरित्र (आ. श्री सोमकीर्ति भट्टारक)	42.	सम्यक्त्व कौमुदी
43.	सती मनोरमा	44.	सीता चरित्र (श्री दयाचंद गोलीय)
45.	सुरसुंदरी चरित्र	46.	सुलोचना चरित्र
47.	सुकुमाल चरित्र	48.	सुशीला उपन्यास
49.	सुदर्शन चरित्र (पं. गोपालदास बरैया)	50.	सुभौम चक्रवर्ती चरित्र
51.	हनुमान चरित्र	52.	क्षत्र चूड़ामणि (जीवंधर चरित्र)

संपादित हिंदी साहित्य

1. अरिष्ट निवारक त्रय विधान
   - नवग्रह विधान • वास्तु निवारण विधान • मृत्युंजय विधान (पं. आशाधर जी कृत)
2. श्री जिनसहस्रनाम एवं पंचपरमेष्ठी विधान
3. श्री जिनसहस्रनाम विधान (लघु) आदि एक नाम अनेक
4. शाश्वत शांतिनाथ ऋद्धि विधान
   - भक्तामर विधान (आ. मानतुंग स्वामी जी (मूल) • शांतिनाथ विधान (पं. ताराचंद्र जी)
   - सम्मेदशिखर विधान (पं. जवाहर दास जी)

5.	कुरल काव्य (संत तिरुवल्लुवर)	6.	तत्त्वोपदेश (छहढाला) (पं. प्रवर दौलतराम जी)
7.	दिव्य लक्ष्य (संकलन- हिंदी पाठ, स्तुति आदि)	8.	धर्म प्रश्नोत्तर (आ. श्री सकलकीर्ति जी)
9.	प्रश्नोत्तर श्रावकाचार (आ. श्री सकलकीर्ति जी)	10.	भक्तिसागर (चौबीसी चालीसा संग्रह)
11.	विद्यानंद उवाच (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)	12.	सुख का सागर (चौबीसी चालीसा)
13.	संसार का अंत	14.	स्वास्थ्य बोधामृत
15.	पिच्छि-कमण्डलु (आ. श्री विद्यानंद जी मुनिराज)		

गुरु पद विनयांजली साहित्य

1.	आचार्य श्री विद्यानंद जी की यम सल्लेखना (मुनि प्रज्ञानंद)	2.	अक्षर शिल्पी (मुनि शिवानंद)
3.	पगवंदन (मुनि शिवानंद प्रशमानंद)	4.	वसुनंदी प्रश्नोत्तरी (मुनि जिनानंद, ऐ. विज्ञान सागर)
5.	दृष्टि दृश्यों के पार (आ. श्री वर्धस्व नंदनी, वर्चस्व नंदनी)	6.	स्मृति पटल से भाग-1 (आ. श्री वर्धस्व नंदनी)
7.	स्मृति पटल से भाग-2 (आ. श्री वर्धस्व नंदनी)	8.	अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी (ऐलक विज्ञान सागर)
9.	गुरु आस्था (ऐलक विज्ञान सागर)	10.	परिचय के गवाक्ष में (ऐलक विज्ञान सागर)
11.	स्वर्णोदय (ऐलक विज्ञान सागर)	12.	स्वर्ण जन्मजयंती महोत्सव (ऐलक विज्ञान सागर)
13.	हस्ताक्षर (ऐलक विज्ञान सागर)	14.	वसु संबुध (महाकाव्य) (प्रो. डॉ. उदयचंद जी जैन)
15.	समझाया रविन्दु न माना (सचिन जैन 'निकुंज')		

परम पूज्य आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज कृत

जिणवाणी-थुदी

महुरं विसदं पिय-गंभीरं

हिदयरं मिदं सिरिजिणवाणिं।

अणेगंतमयं सिआवायमयं

णिरुवमं समं सिरिजिणवाणिं।

जिणसव्वंगादो णिस्सरिदं

भविचित्तहरं सिरिजिणवाणिं।

बारस-अंगेहिं संजुत्तं

लोएपुज्जं सिरिजिणवाणिं।

कंठादिवचोकारणरहिदं

तयरोयहरं सिरिजिणवाणिं।

जगमंगल्लं जगकल्लाणिं

पणमामि सया सिरिजिणवाणिं।